छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह : श्रावण, भादपद, संवत् 2075
अगस्त 2018

ओ३म्

अंक 155, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

स्वतन्त्रता दिवस, श्रावणी पर्व एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ

श्रावणी सन्देश

श्रावणी आर्यों का प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान पर्व है। यह पूर्णतः वैदिक पर्व है। इनका सम्बन्ध भी वेदाध्ययन एवं अध्यापन से है। गृह्यसूत्रानुसार इसी दिन चातुर्मास्य का उपाकर्म किया जाता था, जो निरन्तर वर्षा के चार मास तक चलता था। इसी आधार को लक्ष्य कर आर्यसमाज में भी वेदसप्ताह की परम्परा आरम्भ हुई। आर्यसमाज के संस्थापक प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती का दृढ़ मन्तव्य था कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् समस्त संसार को श्रेष्ठ बनाओ। श्रेष्ठ आचरण के बिना श्रेष्ठता आयेगी कहां से ? इनका आवश्यक मार्गदर्शन वेद से प्राप्त होगा। इसलिए उन्होंने दुनियां के लोगों से कहा था – वेदों की ओर लौटो, वेदों में समस्त मानवीय समस्याओं का समाधान है, क्योंकि इस धरती पर वेद ही ऐसे ज्ञान के आगार ग्रंथ है जो हमें निर्भ्रान्त बनाते हैं। वैदिक ज्ञान उदात्त एवं निर्मल होने से सांसारिक विक्षोभ एवं वैमनस्य की दुर्भावना से त्राण प्रदान कर सकते हैं। अतः वेद हमारे धर्म का मूलाधार है। श्रावणी का यह पावन पर्व वेदप्रचार की प्रेरणा प्रदान करता है, वेदानुसार जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः आर्यों आइए, हम संकल्पबद्ध होकर वेद के पावन सन्देशों को जन–जन तक पहुंचाने का बीड़ा उठाए।

आचार्य अंशुदेव आर्य
सभा प्रधान

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७५
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११८
दयानन्दाब्द – १९५

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८१०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष – १४, अंक ०१ — ओ३म् — मास/सन् – अगस्त २०१८

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सम्रसम्रकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	हे उषाओं ! हे आतित्यों !	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	समाज के निगलता जातिवाद का जहर	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अनैतिकता की महामारी का इलाज	कैलाश सत्यार्थी	०८
४.	आर्यसमाज और नई सदी	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१०
५.	श्रावणी हमें क्या चिन्तन देती है	महात्मा चैतन्यमुनि	१२
६.	ऐसा क्यों है ?	अजय शर्मा	१५
७.	परिग्रह ही दुःख का कारण है	कृष्णचन्द टवाणी	१७
८.	वेदप्रचार आर्यसमाज का मुख्य कार्य	डॉ. महेश विद्यालंकार	१८
९.	"अहंकार"	ओमप्रकाश बजाज	२०
१०.	यजुर्वेद एक सरल अध्ययन	रमेशचन्द्र चौहान	२१
१२.	अन्न समृद्धि से ही परिवार में सुख शान्ति संभव	डॉ. अशोक आर्य	२४
११.	स्वामी समर्पणानन्द–व्यक्ति नहीं विचार	स्वामी विवेकानन्द	२६
१२.	स्वातंत्र्ययोद्धा–दिव्यानन्द	जीवनदर्पण से साभार	२८
१३.	होमियोपैथी से हृदय शूल सम्बन्धी रोगों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१४.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद

वेदामृत

हे उषाओं ! हे आदित्यो !

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अजैष्माद्यासनाम च, अभूभानागसो वयम्।
उषो यस्माद् दुष्वप्न्याद्, अभैष्माप तदुच्छतु।
अनहसो व ऊतयः, सुऊतयो व ऊतयः॥ ऋग्. ८.४७.१८

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः** । देवता **आदित्याः उषाश्च** । छन्दः **महापङ्क्तिः जगती** ।

● **(अद्य)** आज **(वयं)** हम **(अजैष्म)** विजयी हुए **(असनाम च)** और (हमने) प्राप्तव्य को पा लिया है, **(अनागसः)** निष्पाप-निरपराध **(अभूम)** हो गये हैं, **(उषः)** हे उषा ! **(यस्मात्)** जिस **(दुष्वप्न्यात्)** दुःस्वपन-जन्य दुष्परिणाम से **(अभैष्म)** (हम) डरते हैं **(तत्)** वह **(अप उच्छतु)** दूर हो जाये। (हे आदित्यो और उषाओं) **(वः)** तुम्हारी **(ऊतयः)** रक्षाएँ **(अनेहसः)** निष्पाप है, **(वः)** तुम्हारी **(ऊतयः)** रक्षाएँ **(सु-ऊतयः)** शुभ रक्षाएँ।

हमारा जीवन अतिशय कंटकाकीर्ण है। जितना हमारा लक्ष्य महान् है, उतने ही अधिक विघ्न हमारे मार्ग में है। आध्यात्मिक, अधिवैदिक, आधिभौतिक दुःखत्रय के अभिघात से संभल पाना मानव के लिए अति दुष्कर है। चिरकाल से विघ्नों और संकटों पर विजय पाने के लिए हम जूझ रहे थे। यह देखकर हृदय में हर्ष का पारावार हिजोरें ले रहा है कि हम निष्पाप और निरपराध हो गये है। पर अब भी हम संत्रस्त हैं कि प्रकाश की इस पूंजी को हम स्थिर रख पायेंगे भी या नहीं।

जब हम भूत के दुःस्वप्नों का ध्यान करते हैं, तब थोड़ी देर के लिए विचलित हो जाते हैं। जीवन में दुःस्वप्न कैसी व्यापकता और भयानकता के साथ मनुष्य के घेरे हुए हैं। सोते हुए जो दुःस्वप्न आते हैं, उनसे कहीं अधिक दुःस्वप्न जागृत अवस्था में हम जानबूझकर लेते हैं। हम जो किसी सत्पुरुष को हानि पहुंचाने का विचार बनाते हैं, पवित्र भावना से चल रहे किसी यज्ञकार्य में बाधाएँ डालने के अपवित्र इरादे करते हैं, सामूहिक पाप करने की योजनाएं बनाते हैं वे सब जागृत व्यवस्था के दुःस्वप्न हैं, जो स्वप्नावस्था के दुःस्वप्नों से भी भयंकर है। ठीक-ठीक कहा जाए तो स्वप्नावस्था के दुःस्वप्न स्वतन्त्र नहीं, किन्तु जागृत व्यवस्था के दुःस्वप्नों की ही प्रतिध्वनि होते हैं। हम चाहते हैं कि ये दोनों दुःस्वप्न और इनसे होने वाले दुष्परिणाम हमसे दूर रहें और हम पवित्रात्मा बनकर जगतीतल पर निवास करें। हे हमारे मानस में तामसिकता को चीरकर उदित होनेवाली उषा ! तू सदा ही हमारे अन्दर ज्योति को उद्भासित करती रह। हे उषाओं और उषाओं के आगमन के पश्चात् उज्ज्वलतम प्रभा के साथ एक-एक करके उदित होने वाले दिव्य गुम रुप आदित्यों ! तुम हमें अपनी रक्षा में ले लो। तुम्हारी रक्षाएँ निष्पाप हैं, तुम्हारी रक्षाएँ शुभ रक्षाएँ हैं।

---

१. पाप संभक्ती। २. दुष्वप्नाद् जातं दुष्वप्न्यम्।

सम्पादकीय

समाज को निगलता जातिवाद का जहर

देश का दुर्भाग्य इससे बड़ा और क्या होगा कि जो भारत कभी जगद्गुरु के रुप में विश्व जन-समुदाय की सुख-समृद्धि हेतु तथा विश्व के समस्त मानवों को परस्पर प्रेम और सहिष्णुता का सक्रिय रुप से मार्गदर्शन करता था वही भारत आज स्वयं सम्प्रदायवाद, जातिवाद, धार्मिक उन्माद, कुप्रथाओं के प्रति अन्धविश्वास, भाषावाद, आतंकवाद, अशिक्षा, आर्थिक भ्रष्टाचार और व्यवसायवादी राजनीति जैसे कुटिल आन्तरिक नवग्रहों से ग्रसित होकर निरन्तर क्षतिग्रस्त और जर्जर होता जा रहा है।

इतने पर भी धर्म के कुछ ठेकेदार पूर्वजों की गौरवगाथा का गुणगान कर लेना और फिर लकीर के फकीर की भान्ति अन्धविश्वासी बने रहना ही धर्म समझ बैठे हैं तथा आवश्यकता के अनुसार एकता, संगठन के मार्ग में रोड़े की भान्ति अड़े रहने में गौरव भी समझ रहे हैं।

जिस हिन्दू जाति में गार्गी, मदालसा, घोषा जैसी विदुषी नारियों का सम्मान उनके पांडित्य के ही कारण था उसी नारी समाज को अब तक ऐसे ही अदूरदर्शी धर्मगुरुओं की हठधर्मिता के कारण अशिक्षित रहना पड़ा। इसी तरह धर्म की आड़ में विधवाओं को सताया जाता रहा है। लेकिन समय परिवर्तनशील है। उन्नीसवीं सदी में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द जैसे दूरदर्शी समाज सुधारकों ने अपने अदम्य उत्साह, साहस और व्यक्तित्व के बल पर मानव धर्म के नाम पर लगे कलंक रुपी कुप्रथाओं के धब्बों को जिस लगन से धोया उनके इन महान् कार्यों का भारत सदा ऋणी रहेगा।

लेकिन मानवधर्म का अर्थ न समझने वाले स्वार्थी, दंभी, लुक-छिप कर इन घिनौने कुप्रथाओं के प्रचार-प्रसार में आज भी सक्रिय है जब तक ऐसे पाखण्डियों को शासन द्वारा दण्डित न किया जायेगा, कुप्रथाओं की लकीर पूरी तरह से मिटना कठिन है। आज जनचेतना युक्त नवीन साहित्य रचना के प्रचार व प्रसार की। वर्तमान भारतीय समाज का सबसे बड़ा कलंक है जातिवाद। वैदिक आर्य ऋषियों ने समाज की सुव्यवस्था हेतु आजीविका के आधार पर सुन्दर वर्ण व्यवस्था की थी और आजीविका का आधार था गुण-धर्म। लेकिन महाभारत के उपरान्त ज्ञान के अभाव में वर्ण व्यवस्था का स्थान घेर लिया जातिवाद ने, और यही जातिवाद हिन्दू जाति के विनाश का बीज बना। अदूरदर्शी अज्ञानियों की हठधर्मिता,

अहंकार और क्षुद्र स्वार्थवश एक हिन्दू जाति अनेक उपजातियों में विभक्त कर दी गई। उनमें आपस में रहन-सहन खान-पान तक में भिन्नता की भित्तियां खड़ी कर दी गई।

सर्वे भवन्तु सुखिनः *की मंगलकामना करने वाले पूर्वज ऋषियों की आज यह सन्तान आठ पूरबिया नौ चूल्हे वाली लोकोक्ति को ही धर्म समझे बैठी है। इतना ही नहीं, जाति और देश की उन्नति का भविष्य न देख पाने वाले अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने वाले पोंगा पण्डितों ने अपने ही भाईयों को स्वार्थ-अहंकारवश हिन्दू संगठन से बहिष्कृत और तिरस्कृत किया। उन्हीं कुछ धर्म धुरन्धरों की इस निन्दनीय करनी का दुःखद परिणाम सारी हिन्दू जाति को आज भोगना पड़ रहा है। वही तिरस्कृत और बहिष्कृत हिन्दू आज धर्मान्तरण करके विधर्मी बन प्राचीन वैदिक धर्म और संस्कृति की ही नहीं हिन्दुओं की भारी जन-धन को भी हानि कर रहे हैं। इतने पर भी विज्ञान के युग में रहते हुये भी वे धर्म के तथाकथित कुछ ठेकेदार समाज को नया ज्ञान और नई चेतना देने की अपेक्षा भोली-भाली, अशिक्षित, धर्मभीरु जनता को पाप-पुण्य के नाम पर, स्वर्ग-नरक का भय दिखा कर धर्म के सम्बन्ध में गहरी जड़ जमा कर भ्रमित कर रहे हैं।*

स्वामी दयानन्द के अनुसार ***"शुचं द्रवतीति शूद्रः"*** *जो व्यक्ति अपवित्र अर्थात् गुण-कर्म से हीन अपवित्र बन कर रहता हो केवल वही शूद्र है। मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में ऐसे ही शूद्रों की निन्दा की गई है। यदि ऐसा न होता तो फिर स्मृतिकार ऐसा कदापि न लिखते-* ***"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते"*** *(मनुसंहिता)। गौ जैसे लाभकारी राष्ट्रीय पशुधन का वध करने पर ही वशिष्ठ जी को श्रीराम के पूर्वज प्रषध्र को जो क्षत्रिय था* ***"शूद्र"*** *घोषित करना पड़ा और फिर देखिये -* ***"शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्र।"*** *जब गुण-कर्म संस्कार से शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण अपने गुण-कर्म से शूद्र हो जाता था, राष्ट्र का अहित करता है तब वह ब्राह्मण ब्राह्मण न होकर शूद्र पदवी पाता है। इतने पर भी शूद्रों के प्रति तुलसी लिखते है कि -* ***नहीं शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना*** *। ऐसी स्थिति में जगद्गुरु कालीन वैदिक ऋषियों की बात मानी जाय या ४०० वर्ष पहिले जन्मे तुलसी की। तुलसी कट्टर भक्त थे और भक्ति में तर्क को स्थान कहाँ ? ऐसे ही प्रचारकों के कारण आज के तर्कप्रधान युग में भी जातिवाद को मानने वाले और अपने ही शूद्र भाईयों को पीड़ित और अपमानित कर अपनी हिन्दू संस्कृति की जड़ों को कमजोर करते जा रहे हैं। धर्माचार्य भी विराट् पुरुष के चरणों से शूद्रों का जन्म होना मानते हैं लेकिन कभी भी इन्होने गहन चिन्तन द्वारा इस रहस्य को जानने का यत्न नहीं किया कि हम सभी भगवान् और महापुरुषों के चरणस्पर्श तथा चरणों में साष्टांग दण्डवत् करते हैं फिर भी व्यवहार जगत् में शूद्रों को हेय दृष्टि से देखते हैं यह तो प्रत्यक्ष में भगवान् का भी अपमान है। यदि शरीर में से चरणों का विच्छेदन कर अलग कर दिया जाय तो फिर ज्ञानी ब्राह्मण और बाहूबलरुपी क्षत्रिय भी केवल मिट्टी के ढेले सदृश ही रह जायेंगे। शरीर के आधार स्तम्भ तो चरण ही है। यही दशा आज हिन्दू धर्म की हो रही है शूद्र वर्ग का बहिष्कार करने के कारण। जहां तक पुराण, स्मृति-ग्रन्थों का प्रश्न है उनके विषय में इतना ही समझ लेना पर्याप्त है कि -* ***"क्वचिद् ग्रन्थान् प्रक्षिपन्ति क्वचिदन्तरितानपि"*** *इन ग्रन्थों में बाद में क्षेपकों का समावेश किया गया। तभी तो -* ***"शब्दजालमहारण्ये चित्तभ्रमणकारणम् - अतः प्रयत्नाज्ज्ञातव्यं तत्वज्ञैस्तत्वात्मन्"*** *(विवेक चू.) अतः वैदिक धर्म के तत्व के जिज्ञासुओं की तर्क बुद्धि का ही सहारा लेना चाहिये। बाबा वाक्यप्रमाण का सहारा नहीं।*

अतः भारतीयों को जिजीविषा देने के लिये, उन्हें अनुप्रणित करने के लिये, जातिगत भेदभाव, ऊंच-नीच, छूआ-छूत मिटाने के लिये, जाति को समाज को, देश को नई चेतना, जागृति देने के लिए, नया ज्ञान, नई दिशा देने के लिए, आर्थिक विसंगति दूर करने हेतु सर्वाधिक सशक्त माध्यम है - शिक्षा। तभी तो कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण है। देश की ही नहीं, विश्व की जनसंख्या इतनी तीव्र गति से बढ़ रही है कि मानव-जाति आज के परमाणु बम की अपेक्षा भुखमरी से ही मर जायेगी और अपने देश में इस जनसंख्या वृद्धि की समस्या सर्वाधिक बढ़ा रहा है मुसलमान। जो इस्लाम की आड़ में अपने घर में चार औरतें रख सकता है और देश सुधारक नेताओं ने अपनी दब्बू नीति के कारण इसे बढ़ावा ही दिया। मुसलमानों की इस बेहिसाब जनसंख्या वृद्धि से ही स्वतन्त्र भारत में अनेक समस्यायें उठ खड़ी हुई है। तलवार के बल पर शासन करने वाले, विदेशी मजहब वाले अब वोटों के बल पर शासन करेंगे और फिर पूरे भारत पर होगा पुनः इस्लाम का शासन। उसी दिन भारत में लोकतन्त्र की जड़ समाप्त हो जायेगी सदा के लिये। इसी घातक योजना के अन्तर्गत आज के बहुसंख्यकों को अल्पसंख्यक बनाने का षड़यंत्र चल रहा है और यदि हिन्दू इस षड़यंत्र के खिलाफ जाति को सचेत करता है तो उल्टे ही सम्प्रदायवादी करार कर देते हैं गद्दीनसीव नेता। लेबनान में इसी प्रकार वहां मुसलमानों ने ईसाईयों को अल्पमत में बना डाला है और सत्ता का इस्लामीकरण करने के लिये नित्य नर-संहार हो रहा है। भारत के राजनीतिज्ञ यह जानते हुये भी देश की सबसे बड़ी इसी समस्या की ओर जानबूझकर आँखे बंद किये बैठे हैं। पूरे विश्व का मुसलमान अपने मजहब के नाम पर संगठित है तो फिर हिन्दुओं का संगठित होना कौन-सा अपराध है ? भारत का मुसलमान भारत और यहां की राजनीति से ऊपर अपने मजहब के प्रति व्यवहार बना कर खुलेआम धर्म निरपेक्षता की धज्जियां उड़ा रहा है। बहादुरशाह जफर ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में शासन करने का रहस्य तब जाना जब रंगून की जेल में बन्द था तभी तो ये शेर लिखना पड़ा -

न कसीदे से चलता है न कलमे से चलता है - ये कोर सल्तनत लोहे से चलता है।

इन आज के राजनीतिज्ञों को इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिये। अगर भारत देश को सच्चे अर्थ में लोकतन्त्र बनाये रखना है तो फिर अपनी दब्बू नीति, फूट डालो राज करो जैसी नीतियों का त्याग करना होगा। एकता, समता बनाये रखनी है तो फिर राष्ट्र की समस्याओं के निराकरण हेतु धर्म और मजहब से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित में भारत के समस्त निवासियों को एक-सा कानून बना कर पालन भी करना- कराना होगा और इससे भी आगे बढ़ कर साहस के साथ राष्ट्रीय उन्नति को प्रधानता देते हुये धर्म और मजहब की नये सिरे से व्याख्या करनी होगी। राष्ट्र के हित और मजहबी नियमों के बीच सीमा रेखा खींचनी होगी। व्यक्ति के स्थान पर व्यक्तिवाद की पूजा होगी, तभी मानव जीवन के मूल्य का अवमूल्यन होने से रोका जा सकेगा। तभी देश में राम-राज्य स्थापित हो सकता है। आज देश में धर्मगुरुओं और राजनीतिज्ञों की थोथी भाषणबाजी और नारेबाजी का जनमानस पर व्यापक प्रभाव क्यों नहीं पड़ रहा है ? कारण स्पष्ट है कि इनकी कथनी और करनी में जमीं-आसमान का अन्तर होता है। मानव को सच्ची प्रेरणा तो व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति से मिलती है। अतः देश के भोले और भ्रमित नवयुवकों ! देश के कर्णधार तुम्हीं हो। भ्रष्ट और भ्रमित लोगों के शिकंजे में जकड़े भारत का ही नहीं समस्त मानव जाति को उपनिषद् का यह उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत का शंखनाद सुना दो।

- आचार्य कर्मवीर

अनैतिकता की महामारी का इलाज

: कैलाश सत्यार्थी :

ज्वलन्त मुद्दा

बच्चों के साथ दुष्कर्म और यौन शोषण की घटनाओं ने अब अनैतिकता की महामारी का रुप ले लिया है। पिछले कई दशकों से बाल दासता के खिलाफ अपने प्रयासों से मैंने जो सीखा है, उससे मैं महसूस करता हूं कि बाल-तस्करी और यौन शोषण के खिलाफ प्रस्तावित दोनों कानून इन अपराधों को मिटाने में सहायक सिद्ध होंगे।

संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में ऐसे कुछ ही अवसर आते हैं, जब सदियों पुरानी सामाजिक-सांस्कृतिक, विसंगतियों से पनपे अपराधों को रोकने के लिए प्रभावी कानून पारित किये जाते हैं। संसद के इस मानसून सत्र में ऐसा ही अवसर आया है। गुलामी का एक घिनौना रुप मानव तस्करी यानी ह्यूमन ट्रैफिकिंग हमारे समाज में कोढ़ की तरह फैला हुआ है। इसे खत्म करने के लिए पहली बार संसद में एक विधेयक "ट्रैफिकिंग ऑफ पर्सन्स (प्रिवेशन प्रोटेक्शन एंड रिहैबिटिलेशन) बिल २०१८" पेश हुआ है। पूरे राष्ट्र को तकरीबन रोज ही शर्मिंदगी से भर देने वाली बच्चों के साथ दुष्कर्म और यौन शोषण की घटनाओं ने अब अनैतिकता की महामारी का रुप ले लिया है। कुछ दिन पहले बच्चों के यौन शोषण और दुष्कर्म के खिलाफ सख्त सजा का प्रावधान करते हुए जो अध्यादेश लाया गया था, उसे भी कानून में बदलने का एक विधेयक क्रिमिनल लॉ (अमेंडमेंट) बिल २०१८ लाया जा रहा है। एक आंकड़े के अनुसार देश में प्रति आठ मिनट पर एक बच्ची गुम होती है। इसी तरह हर घंटे करीब आठ बच्चे अपनी माँ के आंचल से बिछुड़ जाते हैं। ये बच्चे ह्यूमन ट्रैफिकिंग के शिकार होकर बाल मजदूरी, भिक्षावृत्ति और वेश्यावृत्ति आदि के लिए खरीदे-बेचे जाते हैं। इनक बचपन छिन लिया जाता है और वे भय और हिंसा के साए में जीने को मजबूर हो जाते हैं। इतना ही नहीं, भारत में हर घंटे कहीं न कहीं दो बच्चे दुष्कर्म का शिकार होते हैं। दुष्कर्मी इन बच्चों के कोमल शरीर को ही नहीं, उनकी आत्मा को भी रौंद डालते हैं। वे महज आंकड़े पर नहीं। हर एक संख्या एक चीखते हुए मासूम चेहरे का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसा चेहरा जो दुनियां के इस सबसे बड़े लोकतंत्र में जीवन, स्वतन्त्रता व सुरक्षा जैसे संवैधानिक अधिकारों को खो रहा होगा। मैं ह्यूमन ट्रैफिकिंग से बचाए -छुड़ाए गए ऐसे हजारों बच्चों से मिला हूं, जो जानवरों से भी कीमत पर खरीदे और बेचे गए थे। कुछ महीने पहले हमने बिहार से ट्रैफिकिंग कर लाए गए बच्चों को दिल्ली की एक जींस फैक्ट्री से मुक्त कराया। यह फैक्ट्री बेसमेंट में चल रही थी। ये बच्चे तीन साल तक इस बेसमेंट से बाहर नहीं मिकले थे। लिहाजा जब वे मुक्त होकर बाहर आए तो उनकी आँखे सूरज की रोशनी सहन करने की क्षमता खो चुकी थीं। ऐसे मामलों में मुजरिमों पर बाल मजदूरी, बंधुआ मजदरी और किशोर न्याय से संबंधित कानूनों में कार्रवाई हो जाती है, लेकिन ट्रैफिकिंग के खिलाफ सख्त कानून के अभाव में दलालों पर कार्रवाई नहीं हो पाती।

पिछले कई दशकों से बाल दासता के खिलाफ अपने प्रयासों से मैने जो सीखा है, उससे मैं महसूस करता हूं कि दोनों कानून इन अपराधों को मिटाने में सहायक होगे। मैं इनका पुरजोर समर्थन इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि ये कानून सिर्फ ह्यूमन ट्रैफिकिंग में लिप्त लोगों और दुष्कर्मियों को सजा दिलाने भर के लिए नहीं है, बल्कि ये न्याय के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से भी जुड़े हैं। नया कानून ट्रैफिकिंग को एक संगठित आर्थिक अपराध मानते

वाले डांस बार, नर्तकियों के अड्डे, काकटेल पार्टी रेस्तरां समाप्त करने होंगे। आर्यसमाज का आने वाला समय में बहुत बड़ा दायित्व है। मूल कार्य वैदिक शिक्षा को लाना है, घर-घर वेद पढ़ाना है। घर-घर यज्ञ कराना है, जिससे सभी का आचरण श्रेष्ठ हो, एक भी भारत की सन्तान अवैदिक न होवे, एक-एक का ध्यान रखना है।

वैदिक शिक्षा ऐसी है जिसमें बालक की शिक्षा गर्भ से ही आरम्भ हो जाती है। फिल्मी कलाकार भारतीय संस्कृति का इतिहास व वैदिक साहित्य पढ़ें ऐसी फिल्में बनायें, जिनमें देशभक्ति, इतिहास, विज्ञान, ज्ञान, सद्भावना हों, धार्मिक पारिवारिक सामाजिक हो, पर सीमा के अन्दर हों, अश्लील दृश्य व संवाद न हों। अश्लील फिल्में बनाकर फिल्म डायरेक्टर कहते हैं कि प्रजा की मांग पर हम बनाते हैं, ध्यान रखे जब रामायण व महाभारत टीवी सीरियल चलते थे, तो रेलें बसे भी खाली चलती थी। यातायात खाली हो जाते थे, बाजार सूनसान हो जाते थे। धार्मिक ऐतिहासिक फिल्म (चलचित्र) को जनता पसंद करती है। मोबाईल नेट पर दिखाई जाने वाली अश्लीलता को जड़ से हटाया जाय और ऐसे वीडियो हों जो सत्य घटना पर आधारित हों। चरित्र बिगड़े जैसे न हों, अश्लील न हों। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद में सब सत्य विद्याएँ हैं, ईश्वर ज्ञान व कर्म के विषय में प्रकाश है। चार संहिताओं के उपवेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन शास्त्र, मनु स्मृति आदि ऐसे हैं, जिनका स्वाध्याय करने से ज्ञान विज्ञान को समझ सकते हैं। लगध मुनि, बराह मिहिर कौटिल्य इनके गणित वैदिक ज्योतिष अर्थशास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आज का भौतिक रसायन, जीव विज्ञान, पशु चिकित्सा, वनस्पति, कृषि, तकनीकी, परमाणु, सामाजिक आदि समस्त ज्ञान वेद व वैदिक शास्त्रों में हैं। वैदिक शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा को पढ़ाना चाहिए। वेद ज्ञान का सागर है और दुनियां की शान्ति का मार्ग है। अतः हमें शिक्षा में वेद की उपयोगिता को लाना होगा।

पता - चन्द्रलोक कालोनी, खुरजा

वेद की विशेषता

वेद ईश्वरीय ग्रन्थ है। ईश्वरीय ग्रन्थ में निम्न लक्षण होते हैं जो वेद में विद्यमान है -

१. ग्रन्थ सबसे प्राचीन है। ईश्वर ने वेद का ज्ञान मानव-सृष्टि के साथ ही सर्वप्रथम चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा के माध्यम से दिया था जिससे सब ईश्वर द्वारा निर्मित प्रकति की वस्तुओं का उपभोग कर सकें।

२. उस समय पृथ्वी पर विभिन्न भाषायें उत्पन्न नहीं हुई थी। सृष्टि के आरम्भ में एक ही भाषा थी जिसमें ईश्वर ने अपना ज्ञान ऋषियों को दिया। यदि अन्य भाषायें भी होती तो ईश्वर अपना ज्ञान भाषाओं में भी देता। यदि वह ऐसा न करता तो वह पक्षपाती समझा जाता।

३. जिस ग्रन्थ में ईश्वर के गुण, स्वभाव, सत्यता, न्यायपरायणता तथा दयालुता का परस्पर विरोध विवरण हो।

४. जिस ग्रन्थ मे ईर्ष्या-द्वेष पक्षपात आदि का लेश भी न हो और जो सब मनुष्य-जाति पर एक समान लागू हो सकता हो।

५. वेद के नियम स्वाभाविक, प्राकृतिक और पूर्णतया ईश्वर के आदेशों के आधार पर होने के कारण किसी भी दशा में मनुष्य के लिए हानिप्रद सिद्ध नहीं होते हैं। इसके विपरीत अन्य धर्म ग्रन्थ अपने समुदाय या समाज के हित का ध्यान रखकर उपदेश या नियम बनाये हैं। उनमें स्वार्थ की भावना किसी न किसी रूप में सन्निहित हो जाती है और उसका अन्तिम परिणाम राग-द्वेष की उत्पत्ति से होता है। संसार के अन्य सभी धर्म विशेष सम्प्रदाय या समुदाय के हित की दृष्टि से बनाये गये हैं, इसलिये मनुष्य मात्र के लिए एक समान उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

६. जिस ग्रन्थ में मनुष्य की स्थिति, आकृति, आयु, जन्म, कर्म, मुक्ति का विवरण हो।

७. जिस ग्रन्थ में सृष्टि के अनादित्य, अनन्तत्व और वास्तविक स्वरुप का उल्लेख हो।

८. जिस ग्रन्थ में ईश्वर, जीव और प्रकृति के सम्बन्धों का कर्मानुसार निग्रहानुग्रह आदि का अनुशासन हो।

९. जिसमें मिथ्या महात्म्य न हो।

१०. जो ग्रन्थ लौकिक विज्ञान के विरुद्ध न हो।

११. जिस ग्रन्थ में जन्म से लेकर विवाह एवं अन्त्येष्टी तक संस्कारपरक कर्मकाण्ड तथा पर्व, उत्सव आदि मनाने का विधान हो।

प्रेरणात्मक

श्रावणी हमें क्या चिन्तन देती हैं

- महात्मा चैतन्यमुनि

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुःखों का कारण माना गया है इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है । जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतञ्जलि जी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेषों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि वेदों की ओर लौटों। वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है अतः अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन-चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालान्तर में लुप्त प्राय होती चली गई मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेद स्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरुकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्यसमाज संस्था की यह विशेषता है कि किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रुचि पैदा की जाती है बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते जा जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रुप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकता वाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देने वाले नहीं है इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है मगर मृगतृष्णा रुपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हम में तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है, मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं। वह इस जीवन रुपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है... अतृप्त है... रो भी रहा है... तड़प भी रहा है मगर पुनः पुनः भौतिक

भोगों की आग में स्वयं झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इसी प्रकार की गई है मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रुबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानों वेद कहता है -

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥

(अर्थ. १०-८-३२)

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परमपिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है।

इस मन्त्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द का पान करना है तो चारित्रिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रुपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गए हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता में लाएं। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहां उसे दूसरों का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी, आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों मंडरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओं का समाधान खोजा तो जा रहा है मगर स्थिति यह है कि मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। हम अपने ही देश को लें। यहां पर प्रत्येक नेता या दल अपनी-अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है, राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नहीं है।तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खड़ी कर दी है जो दिन-प्रतिदिन और भी अधिक ऊंची होती जा रही है। चाहे व्यक्तिगत हो, परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्मत हो सकते हैं। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस बात को गांठ बांध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नहीं लगती है मगर उसका परिणाम सुखद होता है क्योंकि हमें अपने-अपने स्वार्थ के दायरों में सिमट कर जीने की आदत पड़ गई है मगर वास्तविकता यह है कि हमें अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा क्योंकि सत्य की सोच ही अन्ततः ठीक होती है। वेद हमें सत्य के साथ जुड़ने की ही प्रेरणा देता है।

हम चिन्तन करें कि आखिर मानव-समाज के भीतर ये दूरियां क्यों बढ़ती चली जा रही है। होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी

भी बन जाते हैं, ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं। जब महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊंचाईयों को छुआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके और गुरुओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। गुरु होना तो बुरी बात नहीं मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रन्थों और उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतया सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे हैं इसलिए अज्ञानता के गढ्ढे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है।

तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग होना था, विलुप्त हो गई है। अतः आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए, जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योंकि एकमात्र वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

पता : महर्षि दयानन्ध धाम, महादेव सुन्दरनगर, जि. मण्डी (हि.प्र.) १७५०१८

: वास्तविक गुरु के लक्षण :

वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों के पठन-पाठन को मुक्ति का साधन मानने वाला हो।

गीत

इस जीवन से प्यारे क्या फायदा,
जो काम किसी केआ न सके।
उपलब्धियां ही अपनी गिनाते रहे,
गीता दाता के लेकिन गा ना सके॥
भौतिक युग का नशा सर पे ऐसा चढ़ा
गुण मानवता के सारे भूल ही गये।
डांस पार्टी में दौलत उड़ाते रहे,
हाथ सहिता को अपना उठा ना सके॥
कैसे आया ना पूछो पर इतना आ गया,
सात पीढ़ी की व्यवस्था तक हो गई।
मौत उड़ा ले गई जीवन पंछी को जब,
चंद सिक्के भी साथ अपने जा ना सके॥
भौतिकी में उठे तो इतना उठ गये,
रात को भी दिन जैसा बना ही दिया।
चरित्र से गिरे तो इतना गिरते गये,
सम्मान अपना भी जग में बना ना सके॥
दौड़ते ही रहे मन में यह तृष्णा लिये,
सम्पन्नता में सब ये आगे ही रहे।
इतना उलझने सजाई है अपने लिये,
सुख चैन से भोजन कभी खा ना सके॥
ऐसा युग आ गया गौर से देख लो,
सेज सबने सजाई है स्वार्थ की।
कोई राजा या कोई सन्त देख लो,
कोई स्वार्थ से स्वयं को बचा ना सके॥
धन जरुरी बहुत है जीने के लिये,
धन बिना काम कोई भी बनता नहीं।
धर्म से कमाया अर्थ ही फलता 'मोहन'
इस बिन शान्ति मन में समा ना सके॥

- मोहनलाल चड्ढा
१७३, एमआईजी-II,
हुडको भिलाई

विचारात्मक

ऐसा क्यों है ?

- अजय शर्मा

आज अगर हम गौर करें तो पाएंगे कि समाज़ में लोगों की कथनी और करनी में विरोधाभास परिलक्षित होता है परिणाम यह कि हमारी सोच के अनुरुप हमारे समाज का निर्माण नहीं हो पा रहा है। समाज की सोच तो उन्नत व प्रगतिशील है किन्तु समाज का व्यवहार समाज के विकास में बाधक बन रहा है। निम्न कुछ उदाहरणों पर विचार करें-

समाज में शाला उन स्थानों में से एक हैं जहां आने वाली पीढ़ी को दिशा दी जाती है। समाज के भविष्य कहलाने वाले बालकों को सामाजिक समरसता का पाठ पढ़ाया जाता है उन्हें पढ़ाया जाता है कि ईश्वर की अनुपम रचना मनुष्य है । यद्यपि भिन्न-भिन्न लोगों की शारीरिक रंग, रुप व क्षमताएँ भिन्न-भिन्न होती है किन्तु इन सब बातों के आधार पर लोगों से व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। सारे मनुष्यों को उस परमात्मा की कृति मानकर सबके साथ समान व्यवहार समाज में लोगों के द्वारा किया जाना चाहिए। जाति धर्म तो इंसान का बनाया हुआ है समाज में जाति के आधार पर लोगों से व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। हमारा देश धर्म निरपेक्ष देश है, देश के संविधान में भी इस बात का जिक्र है कि देशवासियों के साथ जाति या धर्म के आधार पर विभेद नहीं किया जाएगा। ये बातें समाज की उन्नत व विकसित विचार धारा की परिचायक है और काबिले तारीफ है।

किन्तु समाज में लोगों का जो व्यवहार होता है वह इन बातों के बिल्कुल उलट होता है। एक बालक को जब शिक्षा के लिए शाला में लाया जाता है तो उसके दाखिले के वक्त ही प्रवेश आवेदन पत्र में उसकी जाति और धर्म भरवाया जाता है। तत्पश्चात् पूरे विद्यार्थी जीवन में बार-बार उससे उसका जाति प्रमाण-पत्र मांग कर उसे याद दिलाया जाता है कि तुम फलाँ जाति के हो यद्यपि यह उसे विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाने के लिए किया जाता है। सारे विद्यार्थी जीवन में एक बालक जिसने जाति प्रमाण पत्र दिखाकर वो सुविधाएँ ली हो जिनसे अन्य विद्यार्थी वंचित रहे हों तो फिर भला कैसे मानेगा कि सब बराबर है। दूसरी ओर वो विद्यार्थी जो ये देखता आया है कि उसके सहपाठी ने कुछ सुविधाएँ सिर्फ इसलिए प्राप्त कर ली क्योंकि सहपाठी किसी जाति विशेष से है तो उसके मन में भी ये बात गहरी बैठ जाती है कि उसे और उसके सहपाठी को समाज बराबरी का दर्जा नहीं देता है जरुर उसमें और उसके सहपाठी में कोई तो अन्तर है जिसके आधार पर समाज उनके साथ भिन्न तरह से व्यवहार करता है।

विद्यार्थी जीवन में जो बात बच्चों के मन मस्तिष्क में बैठाई गई थी वह और मजबूत हो जाती है जब वे विद्यालय से निकलते हैं। महाविद्यालय में प्रवेश के समय एक विद्यार्थी को जाति विशेष। का प्रमाण पत्र दिखाने पर न केवल स्थान मिल जाता है बल्कि शुल्क में भी रियायत दी जाती है, वहीं दूसरे को कोई रियायत प्राप्त नहीं होती। दोनों ही वर्ग के लोगों के साथ यही व्यवहार समाज में दोहराया जाता है जब वे सरकारी सेवा में भर्ती के लिए आवेदन करते हैं और जब सेवाकालीन पदोन्नति का अवसर आता है। किसी व्यक्ति के साथ ताउम्र विलग व्यवहार किया जाता है। समाज में दो नागरिकों के साथ भिन्न व्यवहार किया जाता है। एक बालक समाज में भिन्न-भिन्न जाति के लोगों के मध्य विभेद होता देखता है, न केवल देखता है बल्कि उससे प्रभावित भी हो रहा है, तो फिर भला उसे कैसे यकीन होगा कि सब नागरिक समान है। यह समानता को किताबों में पढ़ रहा है किन्तु असमानता को जी रहा है। जिसे वह जी रहा वही उसके जीवन का निर्माण कर रहा है। हम लाख पढ़ाते रह जाए कि देश के सब नागरिक समान हैं किन्तु वह तो उसे ही मानके चलेगा जिसे वह जी रहा है।

आरक्षण व्यवस्था को यों भी राजनीति में वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया जाता है। परिणाम यह हो

रहा है कि आज आरक्षण का लाभ पाने के लिए हर तबका अपने आप को पिछड़ा साबित करने पर तुला है। देश कभी जाट तो कभी पाटीदार आंदोलन की आग में झुलस रहा है। अपनी योग्यता बढ़ाकर कुछ हासिल करने की बजाए आरक्षण की बैसाखी लेकर हासिल करने का प्रयास लोगों द्वारा किया जा रहा है। नागरिकों का यह व्यवहार समाज को कैसे सबल बनाएगा, वह देश भला कैसे तरक्की कर सकता है जब उसके नागरिक स्वयं को पिछड़ा साबित करने की होड़ कर रहे हों। कहते हैं कि हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करता है, हम जैसा सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं। जब कोई व्यक्ति मन से यह स्वीकार कर लेगा कि वह अन्य लोगों से पिछड़ा है तो फिर वह अन्य लोगों से प्रतिस्पर्धा किस बल पर करेगा। उसने तो पहले ही हार मान ली है कि मैं पिछड़ा हूँ। मन के हारे हार है मन के जीते जीत। विचारों का विज्ञान भी यह मानता है कि मनुष्य के जैसे विचार होते हैं वह जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है कोई व्यक्ति जब स्वयं को पिछड़ा और अक्षम मान लेता है तो फिर यही सोच उसके विकास में सबसे बड़ी बाधा बन जाती है। वैसे भी आरक्षण व्यवस्था स्वतंत्र भारत में दस वर्षों के लिए की गई थी, बढ़ते बढ़ते आज सत्तर वर्ष हो गए व्यवस्था जारी है। आरक्षित पदों पर भर्ती के लिए कई बार विशेष अभियान चलाए जाते हैं, उसके बावजूद भी आरक्षित पदों का रिक्त रह जाना उन पदों के लिए योग्य पात्रों का न मिल पाना क्या उस व्यवस्था पर ही प्रश्न चिन्ह नहीं है ? क्यों नहीं कमजोर तबकों को सक्षम बनाया जाता ताकि वे प्रतिस्पर्धा में खरे उतर सकें ?

आज हर व्यक्ति समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार से त्रस्त है। हर कोई चाहता है कि भ्रष्टाचार समाप्त हो। नैतिकता की बात हर कोई करता है। जब तक बात औरों की होती है व्यक्ति भ्रष्टाचार करने वाले और उसमें सहयोग देने वाले दोनों को समान रुप से दोषी मानता है। किन्तु जब कभी भी उसके स्वयं की बात होती है, उसका अपना मतलब सध रहा होता है वह कहीं न कहीं भ्रष्टाचार का सहभागी बन ही जाता है। भ्रष्टाचार को मिटाना है तो देश के प्रत्येक नागरिक को अपने वचन और कर्म में समानता लानी होगी। देश के प्रत्येक नागरिक का आचरण शुद्ध व नैतिक होने पर ही भ्रष्टाचार रुपी मलीनता समाज से दूर होगी अन्यथा वह यूँ ही फलती फूलती रहेगी।

वातावरण में फैल रहे प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव पर चर्चा तो सभी करते हैं किन्तु प्रदूषण कम करने का प्रयास करते कम लोग ही दिखते हैं। सभी जानते हैं कि पेट्रोल, डीजल से चलने वाले वाहन वातावरण को प्रदूषित करते हैं। आर्थिक रुप से सक्षम लोग जिनके पास वाहन है कुछ सौ मीटर दूर जाने के लिए भी वे वाहन का प्रयोग करते हैं। पैदल चलने को तो जैसे वे अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। मजे की बात तो ये है कि वे ही लोग पेट्रोल, डीजल की बढ़ती कीमतों और ग्लोबल वार्मिंग पर चर्चा और गोष्ठियाँ करते नजर आते हैं। कुछ गिने चुने लोग ही होंगे जो वाहन सुविधा होने के बावजूद छोटी दूरी पैदल चलकर तय करते हैं। देश का सामान्य नागरिक समस्याओं को सुलझाने में सहयोग करने के बजाए अपने निजी लाभ के लिए ऐसे कार्य कर रहा है जो समस्या बढ़ाने में सहयोगी हो रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण अभी हाल ही में देखने में आया। वातावरण में बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए सरकार ने टू एस, थ्री एस इंजन वाले वाहनों पर प्रतिबंध लगाया। जितने भी वाहन के वितरक थे उनके पास नई गाड़ियाँ थीं, प्रतिबंध लगने पर गाड़ियों की बिक्री नहीं होती तो वितरकों ने तुरंत ही वाहनों की कीमत दस, बीस हजार कम कर दी। सरकार ने इन गाड़ियों पर प्रतिबंध इसलिए लगाया था कि इनसे वातावरण प्रदूषित हो रहा है। वाहनों के दाम कम किए जाने पर रातों रात सारी गाड़ियाँ बिक गई। यह जानते हुए कि इन गाड़ियों के प्रयोग से वातावरण प्रदूषित होगा फिर भी लोगों ने गाड़ियाँ खरीदी। क्या वातावरण प्रदूषण रोकने की जिम्मेदारी केवल सरकार की है आम नागरिक की कोई जिम्मेदारी नहीं है ? अगर समस्या सारे देश की थी तो देशवासियों की निजी लाभ छोड़कर कार्य करना चाहिए था। यहां पर सरकार ने प्रतिबंध आदेश के परिपालन में दो एक दिन की मोहलत देकर वाहन निर्माता कंपनियों के रोष से खुद को बचा लिया था।

- शेष अंगले अंक में

पता : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एसईसीएल, छाल (रायगढ़)

आध्यात्मिक

परिग्रह ही दुःख का कारण है

- कृष्णचन्द टवाणी

सांसारिक जीवन में हम नाना प्रकार के प्रलोभनों से घिरे रहते हैं। भौतिक पदार्थों का आकर्षण इतना प्रबल होता है कि हम निरन्तर उनका संचय करते रहते हैं। गृहस्थ जीवन में अपने परिवार के प्रति इतना मोह तथा ममता उत्पन्न हो जाती है कि हमारी संग्रह की प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़ती जाती है। परिग्रह की माया ऐसी ही है कि वह किसी को नहीं छोड़ती। वर्तमान में कुछ साधु-संत, महात्माओं में भी भौतिक पदार्थों को संचय की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। यह जानते हुए कि अपरिग्रह ही भवसागर से तारता है और परिग्रह डुबोता है, फिर भी हम संग्रह की प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाते हैं। मनुष्य का मन बड़ा ही चंचल होता है। वह नई-नई चीजों के प्रति आकर्षित होता रहता है तथा फैशन के अनुसार अपने घर में वस्तुओं का संग्रह करता रहता है, जिनकी अभी हमें आवश्यकता नहीं है, उनको भी हम भविष्य में परिवार के लिए उपयोगी समझकर संग्रह करते रहते हैं। जबकि प्रभु की कृपा ऐसी है कि जब भी किसी मनुष्य को वह जीवन देता है तो उसे दो हाथ भी देता है, ताकि हाथों से प्रतिदिन कर्म करें और प्रतिदिन ही जितना कमाये उसको सही तरीके से खर्च करें।

धर्मशास्त्रों तथा महापुरुषों का भी यही कहना है कि हक का कमाओं और हक का खाओ। अनुचित तरीकों से मत कमाओं वरना बिना कारण दुःख पाओगे। यदि भविष्य के लिए तथा अपनी संतानों के लिए ज्यादा कमा कर ज्यादा संग्रह कर रहे हैं तो उससे क्या लाभ होगा? संग्रह का अर्थ है- दूसरे को वांछित वस्तु से वंचित रखना। आज बीस-पच्चीस प्रतिशत लोगं के पास ही अधिकांश सम्पत्ति और साधन है। इसी से हम विषमता के दुष्चक्र में फँसे हैं। जमाव अभाव का जनक होता है और इसी से हिंसा, आतंक, विसंगति, शोषण जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती है। एक तरह से अशांति और अराजकता का मूल कारण परिग्रह है। संसार में जीवित रहते हुए जीवनयापन करना भी जरुरी है। बिना आवश्यक सुख-साधनों के काम भी नहीं चलता। परन्तु सुख-साधनों का अत्यधिक संग्रह करने से सच्चा सुख नहीं है। जितने ज्यादा सुख-साधन होंगे, जितनी अधिक सम्पत्ति होगी, उतना ही अधिक दुःख होगा।

सिकन्दर हजारों लाखों व्यक्तियों और सैनिकों का युद्ध में संहार कर विश्व विजयी हो गया तथा अपने खजानों को रत्नों, जेवरातों आदि से भर लिया, किन्तु जब वह संसार से गया तब क्या साथ ले गया? उसने स्वयं कहा कि मेरा जनाजा निकले तब मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर निकाल कर रखना, ताकि लोग यह देख सके कि विश्व विजयी सिकन्दर अपनी विशाल सम्पत्ति में से कुछ भी साथ नहीं ले जा रहा है।

इकट्ठे घर जहां के जर सभी मुल्कों के माली थे।
सिकन्दर जब गया दुनिया से दोनों हाथ खाली थे॥

धन-सम्पत्ति किसी के साथ नहीं जाती, जाता है उसके सुकृत और दुष्कृत तो फिर सम्पत्ति संग्रह करने से क्या लाभ? कहा है - पूत सपूत तो क्यों धन संचे, पूत कपूत तो क्यों धन संचे यदि पुत्र सपूत है तो अपनी कुशलता से स्वयं ही धनोपार्जन कर लेगा, उसके लिए धन संचय की कोई आवश्यकता नहीं है और पुत्र कपूत है तो उसके लिए धन संचय करना व्यर्थ है, क्योंकि वह गलत कार्यों में उसका दुरुपयोग कर नष्ट कर देगा। संतान के लिए सम्पत्ति का संग्रह करने की अपेक्षा उसे शिक्षित एवं संस्कारवान बनाना जरुरी है। यह वास्तव में सत्य है कि अधिक वस्तुओं व धन सम्पदा आदि का न होना भी प्रभु की कृपा है। जब आपके पास अधिक सम्पदा होगी ही नहीं तो आपको उसकी सुरक्षा की चिंता होगी ही नहीं, न उसके वितरण की समस्या होगी और अंत में तो सबको छोड़कर जाना पड़ेगा तो क्यों संग्रह किया जावे? भौतिक चकाचौंध, अभी और चाहिए की प्यास जगाती है और अधिक संचय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। सच्चा सुख तो प्रभु भक्ति में ही है, इसलिए संचय की प्रवृत्ति को त्याग कर प्रभु भक्ति को अपनाओं और जीवन को सफल बनाओं।

पता : ज्ञान मंदिर, सिटी रोड, मदनगंज, किशनगढ़ (राज.) ३०५८०१

प्रासङ्गिक
वेदप्रचार आर्यसमाज का मुख्य कार्य है

– डॉ. महेश विद्यालंकार

सृष्टि के आरम्भ में परमपिता परमात्मा ने प्राणी मात्र के कल्याण व उत्थान के लिये वेदों का ज्ञान प्रदान किया। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद ज्ञान परमेश्वर का जगत् को आदेश, उपदेश और संदेश है। इसलिए वेद सबके लिए तथा सबकों पढ़ने एवं सुनने का अधिकार है। वेदों का चिन्तन मानवता का चिन्तन है। वेद सृष्टि की आचार-संहिता हैं। वेद पुकार-पुकार कर कहे रहे हैं - **'शृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः'**। वेदों की विचारधारा में क्षेत्र, जाति, वर्ग, देश आदि के भेदभाव नहीं है। वेद ज्ञान सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेदों का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत् को सत्य धर्म, न्याय-सुख-शान्ति और सच्चा आनन्द दे सकता है।

''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'' ऐसी धारणा और मान्यता केवल आर्यसमाज ही रखता है। आर्यसमाज तथा उसकी विचारधारा की अनुयायी संस्थाओं में ही प्रातःकाल पवित्र, वेद मंत्रों से यज्ञ होता है। वेद सम्मेलन व वेद कथाएँ यही संगठन आयोजित कराता है। वेद मंदिर तथा **'वेद की ज्योति जलती रहे'** आर्यसमाज नारा देता है। वेदों की रक्षा, परम्परा स्वरुप, पठन-पाठन को जीवित रखने और प्रचारित एवं प्रसारित करने की वसीयत एवं विरासत आर्यसमाज को मिली है। दूसरे पंथ, सम्प्रदाय और विचारधारा वाले नाम तो वेदों का लेते हैं, मगर वेदों को महत्व नहीं देते हैं। वेदों के पुनरुद्धार तथा प्रचार-प्रसार में ऋषिवर देव दयानन्द का योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय है। उन्होने नारा दिया **वेदों की ओर लौटो**। वेदों की मानों। वेदज्ञान ही विश्वशान्ति और विश्व बन्धुत्व का सच्चा मार्ग दिखा सकता है। दुनियां में वेदज्ञान से बढ़कर और कोई श्रेष्ठज्ञान नहीं है। आर्यसमाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य रहा है - वैदिक धर्म का पुनरुद्धार, वेद प्रचार। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, ढोंग-पाखण्ड गुरुडम आदि से जनता को बचाना। अतीत का इतिहास साक्षी है - कि आर्यसमाज वैचारिक क्रान्ति की जीवन चेतना थी। इसकी भूमिका रही है जागते रहो ! वेद परम्परा को जीवित रखने और आगे बढ़ाने में आर्यसमाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी का परिणाम है कि आज तक वेदों के मन्त्रों में एक अक्षर की भी मिलावट नहीं हो सकी है। वेद मन्त्रों के अर्थों में मिलावट के कारण ही अर्थ का अनर्थ हुआ है। इसीलिए लोग वेदों के भाष्यों को पढ़कर उल्टे-सीधे अर्थ लगाकर वेदों के बारें में अनर्गल निराधार तथा घृणित आरोप लगा रहे हैं, जो कि निन्दनीय है। आर्यसमाज ने वेद के बारें में अनर्गल आरोपों के लिए सदा चैलेंज किया और आज भी चैलेंज करने की शक्ति व क्षमता रखता है।

आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेदप्रचार है। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र निर्माण होता है। वेदज्ञान जीवन तथा जगत को सच्चामार्ग बताता है। आज वेदप्रचार की बहुत जरुरत है। वेदप्रचार की कमी के कारण ही रोज नए-नए पन्थ, सम्प्रदाय, गुरु, महन्त महाराज आदि पहले से ज्यादा बढ़ रहे हैं। यदि वेद प्रचार होता तो धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर गुरुओं व महाराजों के इतने लम्बे-चौड़े पाखण्ड भरे व्यापार न फैलते। लोग मुर्दों से मुरादें न मांगते। पढ़े-लिखे, जिम्मेदार लोग निर्दोष जीवों की बलियां न चढ़ाते? धर्म के नाम पर इतने झगड़े विवाद न होते ? वेद ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार होता तो इतना पाप, अधर्म, भ्रष्टाचार, पतन, अनैतिकता आदि न होते ?

दुःखद पीड़ा है कि आज का आर्यसमाज अपने मूल उद्देश्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों आदि से हटकर रहा है, जो मुख्य कार्य वेदप्रचार था, जिससे व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को आर्य बनाना था। जिसके लिए ऋषिवर ने सम्पूर्ण जीवन आहूत कर दिया, जिस वेदप्रचार के लिए अनेक तपस्वी, त्यागी, महापुरुषों ने अपना तन-मन और धन लगा दिया, जो वेद ज्ञान आर्य समाज की पहचान और जान थी, वह वेदप्रचार घट रहा है। वेद प्रचार की जगह स्कूल, औषधालय, बारात-घर, दुकानें, मैरिज ब्यूरों आदि

ले रहे हैं। इन चीजों से आर्यसमाज की साख, सात्विकता, धार्मिकता व पवित्रता नष्ट हो रही है? स्वार्थ, विवाद, पदलोलुपता व अहंकार बढ़ रहा है। मूल छूट रहा है। जहाँ समाज मंदिरों में वेदाध्ययन शालाएँ होनी चाहिए थी? वहाँ स्कूल और दुकानें हैं। उसे स्वार्थी और अधार्मिक लोगों ने अपनी आमदनी का साधन बना लिया है। अब दान, चन्दा, धर्मप्रचार आदि के पैसे को खाते हुए पाप बोध, अपराध बोध तथा आत्मग्लानि नहीं हो रही है ? यह हमारे नैतिक मूल्यों के पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन बातों से संगठन व संस्थाओं में गिरावट आती है। विवाद बढ़ते हैं। प्रभाव घटता है। जनता दूर हटती जाती है। नए जुड़ते नहीं, पुराने चले जाते हैं। जितना आर्यसमाज का प्रभाव, अनुयायी तथा प्रचार-प्रसार होना चाहिए था उतना हो नहीं रहा है। रचनात्मक सुधारात्मक, क्रियात्मक योजनाबद्ध कार्यक्रम हम जनता को नहीं दे पा रहे हैं ? हम जनता से जुड़ नहीं पा रहे हैं। केवल जलसा, लंगर, फोटो और माला वेदप्रचार नहीं है। आज हम इन्हीं बातों को उपलब्धि मान रहे हैं?

यदि हम सच्चाई और ईमानदारी से वेदप्रचार चाहते हैं तो उसके लिए मिल बैठकर गंभीरता और ईमानदारी से सोचना होगा। पहले वेदप्रचार अपने से आरंभ करना होगा ? अपने कार्यकर्त्ताओं, संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों धर्माचार्यों आदि को सम्भालना होगा। उन्हें प्रोत्साहन, सहयोग, महत्व तथा वरीयता देनी होगी। अपनी पत्र-पत्रिकाओं को वेदप्रचार के रास्ते पर लाना होगा। जो आज मूल उद्देश्य से दूर हो रही है। स्थानीय समाज मंदिरों व संस्थाओं को वेदप्रचार पर बल देने की जरुरत है। समाजों में उपस्थिति क्यों नहीं हो रही है? लोग हमसे क्यों नहीं जुड़ रहे हैं ? क्यों का जवाब ईमानदारी से खोजना होगा ? दुनियां की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज है। उसके सबसे बड़े हाल में सात आदमी बैठे हों? कहां है वेदप्रचार ? जबकि वेदज्ञान से बढ़कर और कोई चिन्तन नहीं है। अखबार, दूरदर्शन, मीडिया आदि में हम कहाँ है? राजनीति में हम पिछलग्गू बने घूम रहे हैं।

वेदप्रचार सप्ताह आता है, परम्परा निर्वाह हो जाती है? अपनी पीड़ा छोड़ जाता है। वेदप्रचार की दिशा और दशा पर सम्पूर्ण आर्यजगत् को तत्काल गंभीरता तथा पीड़ा से सोचने और करने की जरुरत है। वेदप्रचार आर्यसमाज की आत्मा है। आत्मा के बिना शरीर का कोई महत्व नहीं होता है। समय की मांग है - वेदप्रचार की सोच ? इसे आगे बढ़ाओ इसे जनता तक ले जाओ। जनता को जीवन और जगत की सही दिशा नहीं मिल पा रही है।

पता : बी .जे- 29, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली - 110052

तृष्णा छन्द

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

(भृर्तहरिकृत-वैराग्यशतक, श्लो. १२)

भावार्थ : हम सांसारिक विषय भोगों का उपभोग नहीं कर पाये, अपितु उन भोगों को प्राप्त करने की चिन्ता ने हमको भोग लिया। हमने तप नहीं किया, बल्कि आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक ताप हमको ही जीवन भर तपाते रहे। भोगों को भोगते-भोगते हम काल को नहीं काट पाये, प्रत्युत काल ने हमको ही नष्ट कर दिया। इसी प्रकार भोगों को प्राप्त करने स्वरूप तृष्णा तो बूढ़ी नहीं हुई अपितु हम ही बूढ़े हो गये।

जीवन-दर्शन

"अहंकार"

- ओम प्रकाश बजाज

हमारे मौसाजी ने अपनी इकलौती लाडली बेटी का रिश्ता पक्का किया, बताया गया कि लड़के का भिलाई में साइकिलों का कारोबार है, हमने मौसाजी को सुझाव दिया कि भिलाई चल कर लड़के के कामकाज का पता कर लिया जाए, मौसाजी ने अपनी बड़ीबड़ी मूंछों पर ताव देते हुए हमारी ओर तिरस्कार भरी नजरों से देखा और गर्व से बोले- **"किसकी हिम्मत है कि हमारे साथ धोखा कर लें !"** शादी हो गई, बिटिया पहली बार ससुराल से लौटी तो उसने रो-रो कर बताया कि वर महोदय सड़क किनारे पेड़ के नीचे साइकिलों में हवा भरते और पंचर बनाते हैं, इसी सदमें ने मौसाजी की जान ले ली।

अहंकार मानव स्वभाव का अभिन्न अंग है, अहंकार में मनुष्य अंधा हो जाता है, उसका विवेक कुंठित हो जाता है, उसे अच्छे और बुरे, सही और गलत का भान नहीं रहता, अहंकार उसे ले डूबता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह क साथ अहंकार को भी दुर्गुण माना गया है, इससे दूर रहने, बचने की सलाह दी जाती है, अंग्रेजी में कहते हैं - "प्राइड हैथ ए फाल" उर्दू में कहावत है "गुरुर का सिर नीचा", इसी संदर्भ में किसी ने क्या सुंदर बात कही है -

अहंकार में तीनों गए धन वैभव और वंश,
न मानो तो देख लो रावण कौरव कंस ॥

अहंकार हर धर्म में वर्जित है, साधु महात्मा, पीर फकीर अहंकार से दूर रहने, अहंकार से बचने का उपदेश देते आए हैं, व्यवहारिक जीवन में हम स्वयं भी अहंकार को टूटते, मिट्टी में मिलते देखते हैं, फिर भी मानव मन को क्या कहा जाए, यह मौका लगते ही फिर अहंकार के चंगुल में फंस ही जाता है। इस चंचल मन पर सतत निगाह रखना बहुत जरुरी है।

अहंकार भला किसा बात का ? इस जीवन का? जहां यही भरोसा ही नहीं कि अगली सांस भी होगी या नहीं। इस रुप और यौवन का ? जिसका क्षय अवश्यमभावी है। धन दौलत का ? यह माया जो चंचल है, जो आज यहां तो कल वहां चली जाती है। एक जगह टिकना जिस का स्वभाव ही नहीं औलाद का ? जो चिड़िया के बच्चों की भांति उड़ने योग्य होते ही फुर्र हो जाती है। अहंकार एक मानसिक विकृति है, एक व्याधि है, किन्तु इसका इलाज न दवाईयों में है न किसी वैद्य हकीम डाक्टर के पास, इसका निदान भी मनुष्य को स्वयं करना होता है तथा इलाज और समाधान भी। हाँ, इसके प्रति निरन्तर सचेत रहना आवश्यक है। हमारे जरा सा गाफिल होते ही यह हावी होने में तनिक भी देर नहीं लगता।

अहंकार वह दुर्गुण है जो व्यक्ति की अन्य सारी अच्छाईयों पर भारी पड़ जाता है, उन पर पानी फेर देता है। अहंकार मनुष्य को सीधे और सही रास्ते से भटका देता है। अहंकार चित्त को मलीन और बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। अहंकार ईश्वर को पसंद नहीं। जब अपने सामने वह किसी को भी कुछ नहीं समझता। अपने दंभ में वह अपने बड़ों और गुरुजनों का भी तिरस्कार कर बैठता है। अंततः यही दंभ उसे ले डूबता है। नम्रता परो को भी अपना बनाती है। अहंकार अपनों को भी पराया कर देता है। सचेतन प्रयासरत रहिए अहंकार से बचने हेतु जहां तक हो सके, जैसे भी हो सके, जितना भी हो सके अहंकार से दूर रहिए।

पता : बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-४८२००१ म.प्र.

सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च ।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेद शास्त्रविदहति ॥

अर्थात् सेना का संचालन, राज्य व्यवस्था, दण्ड देने की प्रक्रिया, प्रजा पर शासन करने की क्षमता, वेदादि शास्त्रों को जानने वाला विद्वान राजा ही कर सकता है। इसलिए राजा विद्वान् होना आवश्यक है।

यजुर्वेद एक सरल अध्ययन

- ले. रमेशचन्द्र चौहान

गतांक से आगे

यजुर्वेद, वाजसनेय या माध्यन्दिन शाखा के रुप में

उपर्युक्त विवेचना के प्रकाश में आज हमारे समक्ष प्रकाशित एवं उपलब्ध यजुर्वेद, वाजसनेय या माध्यन्दिन शाखा के रुप में है। मूल स्वरुप के बारे में पिष्टपेषण की आवश्यकता नहीं है। इस संहिता में ४०अध्याय हैं। प्राचीनकाल में इसके ३०३ अनुवाकों में १९७५ कंडिकाएँ होती थी। आज कल ४० अध्याय १९७५ मन्त्रों में विभक्त है, जो छन्दों में है, पहले कंडिकाएँ कहे जाते थे। मूल यजुर्वेद वाजसनेय शाखा में अक्षुण्ण उपलब्ध होते हुए भी कोई यह न समझे कि यह सर्वप्रथम शाखाकार या याज्ञवल्क्य को साक्षात् हुआ। यथार्थ में चारों वेद मानव सृष्टि के आदि में सर्वाधिक पवित्रात्मा चार ऋषियों के मनों में प्रकट हुए, यह उन्हीं में से एक है, यथा -

(१) अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः।
(शतपथ ११-५-८-३, तुलनीय गोपथ १-६)

(२) अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयंब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्॥
(मनु. १-२३)

(३) तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्म किल्बिषेऽकपारः सलिलो मातरिश्वा। वीकुहरास्तम उग्रो मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतेन॥ (ऋग्वेद १०-१०९-१)
(यही मन्त्र अथर्व. ५-१७-१ में भी है)

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्या मार्तण्ड ने ऋग्वेद भाष्य में इस मन्त्र में आए पद अकूपारः सलिलः मातरिश्वा तथा वीकुहरा का अर्थ क्रमशः आदित्य, अंगिरा, वायु तथा अग्नि किया है, जो कि क्रमशः सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के प्रकाशक प्रथम परमर्षि है। स्वामी जी का यह अर्थ ऋषि ब्रह्मजाया एवं देवता विश्वेदेवा के अनुकूल एवं मौलिक है। अकूपार आदि चारों ऋषियों के नाम नहीं, वरन् उनके गुण धर्म, पात्रता या विशेषताएँ हैं।

यजुर्वेद के ऋषि देवता, छन्द, स्वर तथा वेदार्थ

यजुर्वेद के ऋषि देवता, छन्द तथा स्वर विविध रोचक एवं मौलिक हैं। उदाहरणार्थ प्रथम मन्त्र के ऋषि परमेष्ठी प्रजापति एवं देवता सविता है, जबकि इससे भाग तक छन्द स्वराऽबृहती एवं स्वर मध्यम तथा इसके बाद मन्त्र समाप्ति तक छन्द ब्राह्य उष्णिक एवं स्वर ऋषम है। मन्त्र के मध्य कहीं पूर्ण विराम नहीं है। किसी काल में यजुर्वेद का वर्गीकरण ४० अध्याय ३०३ अनुवाक एवं १९७५ कण्डिकाओं में था। कण्डिका का शब्दार्थी है। छोटे से छोटा अनुच्छेद और उसमें भी छन्द माने जाते थे। आजकल कण्डिकाएँ मन्त्र कहलाती है। यजुर्वेद में छन्द सौष्ठव भी दर्शनीय है। इसमें भी विविधता व्याप्त है। उदाहरणार्थ - तीसवें अध्याय के २२ मन्त्रों में १५ छन्द है। इसके अतिरिक्त इस वेद के सस्वर पाठ के साथ ही हस्तचालन पद्धति भी जुड़ी है। वेदार्थ में इसकी महती सम्पदा (ऋषि देवता छन्द स्वर) का भी उपयोग होता है। हमारे पास हस्तचालन के चित्र उपलब्ध यजुर्वेद के सभी मन्त्र छन्दमय है। पता नहीं क्यों लोग इसे गद्य कहते हैं।

वेदार्थ :- किसी भी ग्रन्थ को समझने के लिए उसकी भाषा का ज्ञान सर्वोपरि आवश्यकता है। वेद के सम्बन्ध में इसे प्रचलित छः वेदाङ्गों में से शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त एवं छन्द से प्राप्त करते हैं। शेष कल्प एवं ज्योतिष तो आयुर्वेद, धनुर्वेद जैसी विशिष्ट विषय हैं। इन्हें वेदाङ्ग कहकर इनकी महिमा बढ़ाना अच्छी बात है। वेदाङ्ग का आशय वेद मित्र समझते तक ही ठीक है। अन्यथा वास्तविक वेदाङ्ग तो देवता (विषय) अनुसार या शिक्षा। व्याकरण निरुक्त छन्द के अनुसार वेदों के वर्गीकरण से प्राप्त संकलन वेदाङ्ग है। कुमारिल भट्ट ने तन्त्र वार्तिक १.३.२ में यही तो कहा है। पं. वीरसेन वेदश्रमी ने गुरुकुल कांगड़ी सम्मेलन में दिनांक १५-४-१९७७ को पठित शोध पत्र में वेदाङ्गों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है। (१) ऋषि (२) देवता (३) छन्द (४) स्वर (५) विनियोग (६) फलज्ञान। हमारे विचार से

वेदाङ्गों के इन तीन प्रकार के वर्गीकरण पर कार्य करने के दिन आ गए हैं। कारण स्पष्ट है कि पूर्वोक्त शब्द शास्त्र वेदाङ्गों की भी अपनी सीमाएँ हैं, क्योंकि वे वेदों के लाखों वर्ष बाद बने हैं। महर्षि यास्क-पाणिनि-पिंगल की भाषा संस्कृत थी, वैदिक भाषा नहीं है। इसे छन्दसि बहुलम् रचकर स्वीकार किया गया है। इस समग्र सामग्री को वेदार्थ हेतु उपयोग के अतिरिक्त भी एक उपाय और है। वह है बार-बार गंभीरतापूर्वक वेदों से ही वेदार्थ अर्थात् वेद के शब्दों का, वेद के शब्दों से ही निर्वचन। इस कार्य में भी महती तर्क शक्ति, भाषा ज्ञान तथा उससे भी बढ़कर सर्वथा सिद्धपूर्ण निष्ठा एवं सर्वोपरि श्रद्धा की आवश्यकता होगी। कई जीवन लग जाएँगे, कई विद्वान अमर हो जाएँगे, तब जाकर वेदों से वेदार्थ का यह महती कार्य सम्भव है। यह असम्भव नहीं है। पुरुषार्थ से परिवर्तन होता है। बानवे वर्ष पूर्व वैक्रमाब्द १९८१ में वैदिक यन्त्रालय से बिना ऋषि देवता आदि की अथर्व संहिता छपी थी, परन्तु अब हम उत्कृष्टता की सीमा छू चुके हैं। आर्य आत्माएँ अविनाशी, अविकारी हैं उनका तो ईश्वर में भी विलीनीकरण नहीं होता। वे तो वेद एवं विश्वकल्याणार्थ मध्य मोक्ष से भी विश्व में परावर्तन कर सकती हैं. आज आवश्यकता तो ऐसे अभ्यास की है कि विगत जन्मों के वेद संस्कारों को आकर्षित-आहूत करके अगले जन्मों तक वेद कार्य की आयोजना की जाए। सच मानिए ये अनुभूतियाँ निश्चित होती हैं और हमारे इह जीवन के कार्य को सुकर, सुगम एवं सरल करने में सहयोगी होती है।

विश्व की वेदार्थ वेदना

वेद विश्व ग्रन्थ है, विश्व धरोहर है। आज वेदना का नवीन निर्वचन यही है कि वेद वह है जो विश्व वेदना उत्पन्न कर दे। मेरी यही तो वैदिक वेदना है कि पदों के सम्पूर्ण विश्व के हितैषी होने पर भी एक भी गुरुकुल या विद्यालय ऐसा उपलब्ध नहीं है, जहां **"अग्निमीले"** (ऋ. १.१.१.) से लेकर उपायता **"पिवबध्यौ"** (अथर्व. २०.१४३-९) तक पूर्वोक्त वेद मित्रों के उद्धरण पूर्वक प्रतिपद पठन पाठन की व्यवस्था हो। कई तो अपने अस्तित्व के लिए ही संघर्षरत हैं। चारों वेदों का तो छोड़ो एक भी वेद का पूर्वोक्त मानदण्डों के अनुसार हिन्दी में भाष्य उपलब्ध नहीं है। म.म. युधिष्ठिर मीमांसक ने ऋग्वेद के लिए ऐसा सीमित प्रयत्न किया था, जो अपूर्ण रहा।

आज उपलब्ध अधिकांश वेद भायों में प्रमाणं का उल्लेख नहीं है। कोई कोई तो षडन्धा कथा को भी पीछे छोड़ चुके हैं। सायण स्वयं अपनी प्रतिज्ञाओं पर भी स्थिर नहीं रहे, विदेशियों की तो बात ही क्या ? आज भी निर्मल निश्छल मनों को **"वेदानुद्धरिष्यति"** पुकार पीड़ा पहुंचा रही है। ऋषि दयानन्द ने सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्त ६२ मन्त्र २ तक भाष्य करके इस ग्रन्थ को पाटने का प्रयत्न किया, परन्तु यह उच्चकोटि की सरल संस्कृत में है। (हिन्दी भाग ऋषिकृत नहीं है यह अनेक प्रमाणों के साथ ही दोनों भाषाओं (संस्कृत एवं हिन्दी) के भाष्यों के तुलनात्मक अध्ययन से भी सिद्ध है। इतना ही नहीं संस्कृत भाग का प्रस्तुतिकरण भी सुगम्य नहीं है। यदि छपाई के समय प्रतिपद अनुच्छेद होते तो कितना अच्छा होता। तथापि जो आनन्द संस्कृत भाग पढ़ने में हैं, वह हिन्दी भाग में कहाँ ? वह तो नीरस है। यजुर्वेद अ. १ मन्त्र ५ से एक पद उदाहरणार्थ प्रस्तुत है :-

अनृतात् (संस्कृत में) न विद्यते ऋतं यथार्थमाचरणं यस्मिन् तस्मिन् मिथ्याभाषणान् मिथ्याकरणान् मिथ्या मानात् पृथग्भूत्वा। अनृतात (हिन्दी में) :- जो झूँढ से अलग। (यह तो भाष्य से पलायन है)

ऋषिकृत भाष्य भाग पढ़ने हेतु निवेदन है। कुछ काल पश्चात् यह हिन्दी से भी अधिक सरल एवं तथ्यपूर्ण लगेगा, यह अनुभूत है। उनके ४३ ग्रन्थों में से सर्वाधिक महनीय ३० ग्रन्थ संस्कृत में है, अतः हमें उनकी भाषा सीखनी ही होगी, तभी उनकी अन्तरात्मा तक पहुंचेंगे। इसी प्रकार वेद पढ़ते रहने से ही वैदिक भाषा भी सीख सकेंगे। ऋषि ने स्वयं भी अपनी संस्कृत भाषा में वैदिक प्रयोग किए हैं। परमात्मा कृपा करे कि कोई ऐसा भाष्य भी तैयार हो, जिसमें समस्त प्रमाण सन्दर्भ वेदों से ही हो और परमात्मा के कोई प्रिय पुत्र-पुत्री किसी काल में ऐसी प्रस्तुति भी देंगे। हम प्रतीक्षा करते हैं। इसमें अमर आर्यत्व के इतिहास के उदाहरण संकेत स्वरुप भी होंगे।

यजुर्वेद की उदात्तता

वेद वैचारिक उदात्तता का अगाध सागर है और हमारा पात्र एक छोटी सी गागर है। हम यहां चञ्चुप्रवेश मात्र प्रस्तुत करते हुए लेख का उपसंहार करते हैं। यजुर्वेद पर पृथक कृति में हमने इसके साहित्यिक मूल्यांकन सहित अनेक पक्ष प्रस्तुत किए हैं -

(१) वेदाधिकार :- विश्व कल्याणी वेदवाणी चारों वर्ण इष्ट मित्र तथा सर्वजनों के लिए कही गई है। यजु. २६.२ से मत्रांस प्रस्तुत है -

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्यभ्यां शूद्राय चार्यायच स्वायचारणाय।

हे मनुष्यों ! जैसे मैने यह कल्याणी वाणी सब मनुष्यों के लिए कही है। वेदाधिकार जैसा ब्राह्मण वर्ण के लिए है, वैसा ही क्षत्रिय, अर्थ=वैश्य, शूद, पुत्र, भृत्य और अतिशूद्र के लिए भी बराबर है। (इसमें स्त्री-पुरुष आबाल वृद्ध देशी-विदेशी सभी सम्मिलित है, मात्र सद्भाव होना चाहिए)

(२) वर्णाश्रम यथा कर्मवाद :- यजुर्वेद श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ से प्रारम्भ होकर श्रेष्ठतम फल ब्रह्म साक्षात्कार पर समाप्त होता है। प्रत्येक मनुष्य को कर्म करते हुए सौ वर्ष किवां पूर्णायु जीने की आज्ञा है (यजु. ४०-२)। अध्याय ३० में सैकड़ों कार्यों का उल्लेख करते हुए यजुर्वेद में उन सबको प्रमुख प्रभाग वर्णों तथा आश्रम (आ+श्रम=चतुर्दिक श्रम) व्यवस्था में बाँधा गया है। कर्म एवं फल के सभी सिद्धान्त यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में पठनीय हैं।

(३) आस्तिकवाद :- यों तो सम्पूर्ण वेद ही आस्तिकता से ओतप्रोत है तथापि यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय (स्वल्प अन्तर के साथ ईशोपनिषत्) का विशेष महत्व है। इसमें ईश्वर के स्वरुप, उसकी सृष्टि तथा कर्त्तव्य कर्म में स्पष्ट उल्लेख है। इसके प्रथम मन्त्र में ही सम्पूर्ण सृष्टि में ईश्वर की व्यापकता तथा अन्तिम मन्त्र में आकाश उपमान के साथ उसके मुख्य नाम ओ३म् बताया गया है, यथा -

(१) ईशावास्यमिदं सवम्। यजु. ४०-१

(२) ओ३म् खं ब्रह्म। यजु. ४०-१७

(४) उदात्तराष्टवाद :- यजुर्वेद राष्ट्रवेद है। इसके अध्याय में १० में ४० बार "राष्ट्र" शब्द आया है। **"आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो"** यजु. २२-२२ को वैदिक राष्ट्रगीत कहा जाता है। वैदिक राष्ट्र सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य है, जिसमें संकीर्ण राष्ट्रवाद को स्थान नहीं है, किन्तु इसमें भूमि अर्जुन, स्थिरीकरण, रक्षा हेतु सैन्य विज्ञान एवं निरन्तर सर्वतोमुखी विकास का प्रावधान है। वैदिक राष्ट्र स्वावलम्बी, सावधान तथा **"भाव स्तेन ईशत"** यजु. १.१ होता है।

(५) प्रथमा संस्कृति :- संस्कृति से किसी राष्ट्र की रचना धर्मिता एवं स्वस्थ परम्पराएँ ज्ञात होती है। यजुर्वेद में जो कुछ लिखा है वह सब वैदिक राष्ट्र में घटित हुआ है। यजुर्वेद का विशेष महत्व इसलिए भी है कि इसमें अ. ७-१४ में उल्लेख है कि सृष्टि में जब भी प्रथम संस्कृति सृजी जाएगी, यह वैदिक संस्कृति ही होगी। वर्तमान सृष्टि में वैदिक आर्य अथवा भारतीय संस्कृति विश्व की प्रथम संस्कृति है। इसकी पुष्टि यजुर्वेद की शाखोपशाखा एवं इतर वैदिक वाङ्मय से सरलतापूर्वक सम्भव है।

(६) शिक्षा :- पूर्वोक्त समस्त कर्मों के समुचित सम्पादन हेतु शिक्षण, प्रशिक्षण, संस्कार सदाचार नय-नीति आदि की आवश्यकता होती है, जो यजुर्वेद में यथास्थान वर्णित है तथा वे वर्णाश्रम व्यवस्था के अंग भी है।

(७) बुद्धिवादी श्रद्धा :- यजुर्वेद में बुद्धि-धी एवं मेधा (आज की भाषा में बैंक एवं जमा शेष) दोनों रुपों में ईश्वर से प्रार्थित हैं। यजप. ३२-१४,१५ में विविध गुणान्वित ईश्वर से मेधा माँगी गई तथा विश्व की सर्वश्रेष्ठ स्तुति प्रार्थना एवं उपासना माना जाने वाला गायत्री मन्त्र पूर्णतः विद्यमान बुद्धि प्रज्ञा को सत्पथ पर प्रेरित करने का सन्देश देता है।

(८) विश्व मानवता :- यजु. ३.३३ में कहा गया है - **तेहि पुत्रसो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय।** जो मनुष्य के लिए जीते हैं वे ही ईश्वर पुत्र हैं। यजु. ३२.८ में कहा गया है कि जब विद्वान ईश्वर को हृदगय गुफा में देखता है तो यह विश्व जीव पंछियों का नीड बन जाता है। **तस्मात् श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा है।** विश्व के अमृत पुत्रों सुनो (यजु. ११-५) मित्र स्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। (मैं मित्र की दृष्टि से सारे प्राणियों को देखूँ। यजु. ३६-१८।

पताः २६२ ए, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर - ४५२००९ (म.प्र.)

अन्न समृद्धि से ही परिवार में सुख शान्ति संभव

उपादेयात्मक

- डॉ. अशोक आर्य

प्राचीनकाल में पशुओं को धन वैभव का प्रतीक माना जाता था। उस युग में आज की भांति रुपया पैसा न होने के कारण ही पशु को धन माना गया। जिसके पास जितने अधिक पशु होते थे, वह उतना ही अधिक धनवान माना जाता था। इसलिए ही प्राचीनकाल में परमपिता परमात्मा से बार बार यह प्रार्थना की जाती थी कि हे प्रभु, हे पिता ! हमें अधिकाधिक पशुधन दे। इतनी विपुल मात्रा में पशुधन दे कि हम आजीवन सुखों को प्राप्त करते रहे। इस तथ्य को ही यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों में इस प्रकार कहा गया है -

उफुता इस गाव उफुता अजाव्यः।
अथो अन्नस्य किलाल उपहुतो गृहेषु नः ।।
क्षेमाय वः शान्त्ये प्रपहो शिवगवं।
शाग्मागम शंयोः शंयोः ।।

(यजु. ३.४३, अथर्व. ७.६०.५)

गाय, बकरी और भेड़ आमंत्रित हैं। हमारे घरों में अन्न का पेय आमंत्रित है। (हे गृह के देवो !) अपने कल्याण और शान्ति के लिए तुम्हारी शरण में आता हूँ। यहाँ सुख, कल्याण, शान्ति और कुशलता रहे।

इस मन्त्र में परिवार के सुख समृद्धि के लिए पशुधन और अन्न समृद्धि की कामना की गयी है। प्राचीनकाल में तो आज के सामान रुपया पैसा न था। इस कारण पशुओं की संख्या को ही धन का समृद्धि का प्रतिक माना जाता था। आज भी जिस घर में, जिस परिवार में गाय आदि पशु हैं, वहां दूध घी आदि की प्रचुरता होगी। जहाँ मनोवांछित दूध, घी आदि प्राप्त होगा, उस परिवार के सभी व्यक्ति हृष्ट पुष्ट व स्वस्थ होंगे। कारण यह है कि घी दूध में अत्यधिक पौष्टिक तत्व होते हैं। इनके सेवन से, इनके उपभोग से यह तत्व हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। इस प्रकार शरीर पौष्टिकता को पाकर हृष्ट-पुष्ट व शक्तिशाली बन जाता है। इसलिए किसी भी परिवार की समृद्धि के लिए, उसके सदस्यों के उत्तर स्वास्थ्य व बुद्धि के लिए, केवल रुपये पैसे की ही नहीं पशु धन का होना भी आवश्यक है।

जिस प्रकार परिवार की समृद्धि के लिए पशुधन आवश्यक है, उस प्रकार ही अन्न की बहुलता भी होनी आवश्यक होती है। विविधि अन्नों के द्वारा ही हमारे सारे भोज्य पदार्थ बनते हैं। यह भोज्य पदार्थ न केवल हमारी क्षुधा को ही शांत करते हैं अपितु पशुदन से प्राप्त दूध आदि की ही भांति अन्न भी हमें पौष्टिकता देता है। इस पौष्टिकता से ही हमारे शरीर में शक्ति व अत्यधिक परिश्रम का स्रोत बनता है। अतएव पशुओं से प्राप्त दुग्धादी एवं अन्न से प्राप्त पौष्टिक तत्वों से, दोनों प्रकार से हमारे सारे भोज्य पदार्थ, हमारी क्षुधा को शांत करने के लिए तथा हमें शक्ति संपन्न करने के लिए बनते हैं। इस कारण ही इस मन्त्र में पशु एवं अन्न दोनों प्रकार के धनों की प्राप्ति की परमात्मा से प्रार्थना की गयी है।

जहाँ मन्त्र में पशुधन व अन्न विपुल मात्रा में प्रभु से माँगा गया है, वहां साथ ही यह भी प्रार्थना की गयी है कि परिवार में सुख, शान्ति, कल्याण और योगक्षेम रहे। परिवार में सुख, शान्ति, कल्याण व योगक्षेम तब ही रह सकता है, जब परिवार के सब लोग मिलकर चलेंगे, एक विचार बना कर चलेंगे। यदि परिजन मिलकर, कदम ताल नहीं करते, एक विचार बनाकर नहीं चलते तो उस परिवार में लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेश रहेगा। जहाँ लड़ाई-झगड़ा व कलह-क्लेश होगा, वहां सुख, शान्ति, कल्याण व योगक्षेम का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। अतः गौण रूप में प्रभु से प्रार्थना करते हुए परिजनों में संगठन की भावना मांगी गयी है, ताकि सब परिजन मिलकर एक विचार बनाकर एक समान का व्यवहार करें।

शिव और शग्म में अंतर किया गया है तथा बताया गया है कि लौकिक सुख शिव है और पारलौकिक सुख शग्म है। शंयोः शब्द योगक्षेम का सूचका है। शाम+योः को मिला कर शंयोः बना। शाम का अर्थ है सुख, शांति और योः का अर्थ है सुरक्षा कल्याण। इस प्रकार शंयोः शब्द योगक्षेम का अर्थ बताता है। लौकिक सुख के लिये हमें अपने परिजनों के साथ मन मिलाकर सब कार्य करने होते हैं। यदि परिवार में एक सदस्य भी क्रुद्ध हो जाता है, असंतुष्ट हो जाता है तो परिवार की सब सुख, शान्ति समाप्त हो जाती है। इसलिए प्रभु से प्रार्थना की गयी है कि हम सब परिजन सब कार्य मिलकर करते हुए लौकिक सुख अर्थात शिव को प्राप्त करें।

शिव को प्राप्त करने के साथ ही हम शग्म अर्थात् परलौकिक सुख को भी प्राप्त करें, जो आगामी जन्म में भी हमारे काम आथा है। हम आध्यात्मिक जीवन बिताते हुए प्रभु की प्रार्थना करें व दीन दुखियों की सहायता करें। इस प्रकार हम शग्म को भी प्राप्त कर लेते हैं। इन दो प्रकार के सुखों को पाकर हमें सुख के साथ ही साथ शान्ति भी मिलती है, कल्याण भी होता है तथा संतुष्टि भी मिलती है। यही योगक्षेम है, जिस प्रकार हम सर्वत्र प्रशंसा का कारण बनते हैं तथा कल्याण को प्राप्त करते हैं।

इस सब के अनुरूप बनते हुए ही गाय, बकरी, भेड़ आदि की मांग करते हुए लौकिक व परिवार में शान्ति व कल्याण के लिए परलौकिक सुखों की इस मन्त्र के माध्यम से परमपिता प्रभु से प्रार्थना की गयी है। जिसे यह सब मिल जाता है, वह इस संसार में भी यश व कीर्ति पाता है तथा आगामी जन्मों में भी यशस्वी होता है।

पता : १०४, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, गाजियाबाद (उ.प्र)

सभासदों की योग्यताएँ

*तीनों सभाओं में सभा के योग्य सभासद् होने चाहिये, जो उपरोक्त सभाओं की व्यवस्था का अच्छी प्रकार से पालन करें। राजा इन सभासदों में से ही होता है, जो उसके गुण और योग्यता के आधार पर चुनाव करके सभापति बनाया जाता है। सभासदों की योग्यता के बारे में ऋषि सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में लिखते हैं - **जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और दुष्टाचारी होते हैं तब राष्ट्र भ्रष्ट हो जाता है।** अर्थात् राजा और प्रजा सभी के लिये धर्माचरण महत्वपूर्ण है। ऋषि आगे लिखते हैं **महाविद्वानों को विद्या समाधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्म समाधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद् तथा जो इन सब में सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव युक्त हो उसको राजसभा का पतिरुप (अर्थात् सभापति या राजा) मान के सब प्रकार उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के अधीन सब लोग वर्तें।** अर्थात् राजा का चुनाव उसके सद्गुणों और योग्यता के आधार पर होना चाहिए।*

सभासदों की योग्यता के बारे में ऋषि ने लिखा है कि इस सभा में चारों वेद, न्यायशास्त्र, निरुक्त, धर्मशास्त्र आदि के वेता विद्वान् सभासद् हों। क्योंकि मनुस्मृति (१२.१००) के निम्नलिखित श्लोक में स्पष्ट लिखा है - सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्वलोकाधिपत्यं च वेद शास्त्रविदहति॥ अर्थात सेना का संचालन, राज्य व्यवस्था, दण्ड देने की प्रक्रिया, प्रजा पर शासन करने की क्षमता, वेदादि शास्त्रों को जानने वाला विद्वान् राजा ही कर सकता है। इसलिए राजा का विद्वान् होना आवश्यक है। ऋषि ने सभासदों की योग्यता के पुनः लिखा है कि इसलिये तीनों अर्थात् विद्यासभा, धर्मार्य सभा और राजसभाओं में मूर्खों की कभी भरती न करें, किन्तु सदा विद्वान और धार्मिक पुरुषों का सम्मान करें अर्थात् वेदादि शास्त्रों के विद्वान् तथा धर्मात्मा पुरुष प्रजा के हितकर कार्यों की ओरराजा का ध्यान आकृष्ट कर सकते हैं इसलिये मूर्खों का चयन उन तीनों सभाओं में नहीं होना चाहिए। ***- ले. मदन रहेजा***

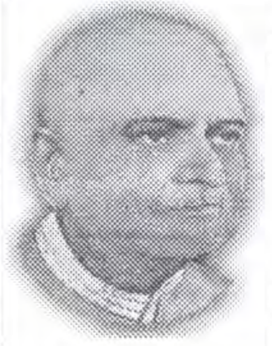

स्वामी समर्पणानन्द – व्यक्ति नहीं विचार

१ अगस्त जयन्ती

- स्वामी विवेकानन्द

अशेषसेमुषी सम्पन्न तथा अलौकिक प्रतिभा के धनी स्वनाम धन्य पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी की शताब्दी उन्हीं के द्वारा संस्थापित प्रभात आश्रम, मेरठ में मनायी गयी। इस अवसर पर वेद शोध संगोष्ठी सम्पन्न हुई, अनेक विश्वविद्यालयों के मान्य विद्वानों ने अपने शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए, ब्रह्मचारियों ने स्वरचित संस्कृत पद्यों से पूज्य स्वामी जी को श्रद्धाजंलि समर्पित की । इस प्रकार यह कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

मेरे मस्तिष्क में प्रश्न उत्पन्न हुआ- जिस व्यक्ति की हम जन्म शती मना रहे हैं, क्या वह केवल एक सुशिक्षित व्यक्ति मात्र था अथवा कुछ और भी ? बहुत ऊहापोह एवं चिन्तन के पश्चात् मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि वह केवल व्यक्ति मात्र नहीं किन्तु विचार थे । उनके लिखित ग्रन्थ- कायाकल्प, पञ्चयज्ञ प्रकाश, गीता, भाष्य, ऋग्वेद मण्डल मणिसूत्र, शतपथ ब्राह्मण भाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद का आंशिक भाष्य, किसकी सेना में भर्ती होगे, कृष्ण या कंश की ? सप्त सिन्धु सूक्त, वेदों के सम्बन्ध में क्या जानों क्या भूलों आदि ग्रन्थों का आलोडन,परिशीलन करने से स्पष्ट हो जाता है कि इन ग्रन्थों का लेखक केवल असाधारण विद्वान् ही नहीं अपितु अपराजेय ऊहा, विलक्षण प्रतिभा रहस्य उद्घाटिनी मेधा एवं अतर्क्य पाण्डित्य का धनी था।

वे कोरे अक्षरों के पण्डित ही नहीं अपितु स्वलक्ष्य निर्धारित निर्भ्रान्त विचारधारा से परिपूर्ण भी थे । उनका दृष्टिकोण तथा लक्ष्य मध्यान्ह भास्कर के देदीप्मान प्रकाश में हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष था। वे बाल्यकाल से ही तातस्य कूपोऽयमिति में आस्था रखने वाले नहीं थे । सामान्य से सामान्य बातों को भी जब तक मन-मस्तिष्क स्वीकार नहीं कर ले, तब तक उसे अपनाने में उन्हें संकोच होता था। बाल्यकाल के गुरुकुलीय जीवन में गले से यज्ञोपवीत निकाल फेक देने वाली घटना इसका ज्वलन्त प्रमाण है । स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा यह कहने पर कि यह गुरुकुल का अनुशासन है। इसका तुम्हारी आस्था से सम्बन्ध नहीं। यदि तुम्हें गुरुकुल में पढ़ना है तो यज्ञोपवीत धारण करना ही होगा। उन्होंने अनुशासन मानकर यज्ञोपवीत पुनः धारण कर लिया किन्तु उसने अपनी आस्था का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उनका अहर्निश यज्ञोपवीत धारण करने के विषय में चिन्तन करना उनकी जागरूकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

यज्ञोपवीत ही क्यों प्रत्येक विषय पर उनका यही दृष्टिकोण रहा, चाहे वर्ण व्यवस्था हो, वेद वैदिक मान्यतायें एवं परम्परायें, कोई भी विषय हो, उन्होंने उसे तभी स्वीकारा, जब उन्हें तर्क-वितर्क के पश्चात् उससे सन्तुष्टि हुई। ऋषि दयानन्द की विचारधारा को भी उन्होने इसी प्रकार अपनाया । किन्तु उनकी विशेषता यही थी कि जब एक बार वैदिक ऋषियों के सिद्धान्तों को उन्होंने स्वीकारा तो वे उसे आत्मसात् कर गये। कभी किसी वैदिक विषय में भ्रम होने पर उन्हें अपनी प्रज्ञा की न्यूनता ही कारण जान पड़ी, वेद या ऋषियों के सिद्धान्तों की निरर्थकता नहीं। महाभाष्यकार पतञ्जलि के इस वाक्य का वे ऐसे अवसर पर असकृत् ध्यान करते थे -

व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम् ।

कई बार लोगों का प्रश्न होता है - क्या स्वामी समर्पणानन्द जी का कोई पृथक् स्वतन्त्र विचार था। इसका एकमात्र यही उत्तर सम्भव है कि आर्य परम्परा विरोधी उनका कोई विचार नहीं था। वे मनु की भांति आर्ष परम्परा के अनन्य उपासक थे -

आर्षधर्मोंपदेशेन वेदशास्त्राविरोधिना ।
यस्तर्केणानु संधत्ते स धर्म एव नापरः ।। मनुस्मृति

व्यापक हो गया। फिर से छद्मवेश में चिरगांव, मोठ, ओरछा, झांसी इत्यादि जगहों पर तोड़-फोड़ तथा क्रांतिकारियों तक हथियार आदि पहुंचाने का कार्य करने लगे। भूमिगत होकर कार्य करने में जिन सज्जनों का सहयोग उन्हें मिला, उनमें मोठ निवासी नारायण प्रसाद तिवारी, मदन मोहन लिटौरिया (वकील), तुलसीदास शर्मा, ब्रजवासी खेर तथा रेव नामक स्थान पर हरदेव सिंह बुंदेला और चिरगांव में नवलकिशोर मिश्र, सुन्नूलाल बिसवारी, कालका प्रसाद बख्शी, महंत त्रिवेणीदास एवं ओरछा में बृजकिशोर मिश्र, मिथला प्रसाद गोस्वामी, भानुप्रतापसिंह (तहसीलदार) इत्यादि विशेष सहयोगी थे। हथियार लाने-ले जाने वालों में माताप्रसाद ऊर्फ दिव्यानन्द स्वामी के साथे थे - डा. बी.बी. केशकर, स्वामी स्वराज्यनन्द, शिवसम्पत्ति शर्मा तथा कानपुर के भी १-२ सज्जन थे सन् १९४३ में अंग्रेजों नेशक के आधार पर छद्मवेशधारी इस स्वामी को बन्दी बना लिया और आगरा जेल में दो वर्ष की सजा दी। संभवतः यहीं पर लालबहादुर शास्त्री, पं. श्रीराम शर्मा प्रभृति व्यक्तित्व उनके निकट सम्पर्क में आये। स्वामी जी के क्रियात्मक जीवन, स्पष्टवादिता, निश्छल व्यवहार, वाङमाधुर्य, दृढ़ वैदिक आस्थासे युक्त व्यक्तित्व से वे बहुत प्रभावित हुए। उस समय क्रांतिकारी का एक ही नारा था -

तिरंगा ये हर किले में चढ़ेगा।
इसका बल, रोज दूना बढ़ेगा॥

इस प्रकार प्राण-प्रण से जुटे महान् वीर, त्यागी, तपस्वी, बलिदानी महापुरुषों के बदौलत ही १५ अगस्त १९४७ को आर्यावर्त्त भारत में स्वातंत्र्य सूर्य का उदय हुआ।

आर्यसमाज को गर्व है कि उन्होने आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा वीर बलिदानी, राष्ट्र को समर्पित किया। यथा - महान् क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, शहीद भगतसिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, पं. गेंदलाल दीक्षित, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम.ए., वीर सावरकर, गया प्रसाद शुक्ल, स्वामी श्रद्धानन्द और इसी कड़ी में पं. माताप्रसाद ऊर्फ दिव्यानन्द स्वामी इत्यादि थे। स्वतंत्रता प्राप्ति में सर्वाधिक ८५% से भी अधिक योगदान अकेले आर्यसमाज का रहा - ऐसा सभी शीर्षस्थ नेताओं ने घोषित किया। आर्यसमाज न होता तो -

न होता स्वराज्य सूर्योदय, न ज्ञान का प्रकाश होता।
न वेद शास्त्र, न रामकृष्ण, न सत्य का विकास होता॥
होता हिन्द किन्तु अवैदिक मतवादियों से पूर्ण।
मेरे देश का गौरव न गूंजता भूमण्डल में॥

- जीवन दर्पण से साभार उद्धृत.

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा

का संदेश देता भ्राता-स्वसा का स्नेह पर्व रक्षाबन्धन भारतीय संस्कृति के मानवीय जीवन मूल्यों के संरक्षण के प्रति संसार को प्रेरित करता है। रक्षा बन्धन का अति प्राचीन इतिहास नहीं किन्तु यह सांस्कृतिक पर्व लोक में बहुप्रचलित है। यह पर्व माता-पिता, भ्राता, भगिनी, मित्र, प्रतिवेशी आचार्य सबको यह बताता है कि हमें अपने संबन्धों की रक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए। धर्म ने संपूर्ण प्रजा संबन्धों को रक्षित किया है। अतः यह वैदिक संस्कृति और धर्म का पावन संदेश है।

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से हृदय शूल सम्बन्धी रोगों का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३,-९४२५५१५३३६

हृदय के चारों ओर से आवरण कर उसका पोषण करने वाली धमनियां कोरोनरी आर्टरीज कहलाती है। इनमें खून के रुक जाने से हृदय पर अत्यधिक दबाव पड़ता है और दर्द होता है। अंग्रेजी में एन्जाइना का अर्थ है घुटन और पैक्टस का अर्थ है - छाती इस प्रकार एन्जाइना पैक्टोरिस का अर्थ हुआ छाती की घुटन इसमें दिल का ऐसा दर्द होता है ऐसा लगता है कि मौत सामने खड़ी है। शरीर का रंग राख की तरह फीका पड़ जाता है और रोगी छटपटाने लगता है श्वास लेने में अत्यधिक कष्ट शरीर पसीने से तर हो जाना, दर्द बांये कंधे तथा बांये हाथ में छोटी उंगली तक फैल जाता है। ऐसा दर्द महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों को अधिक होता है।

हृदय शोथ (सूजन) कई कारणों से होता है, जैसे चोट लगने से वातरोग से गठियाबात रोग से, टाइफाइड से निमोनिया, फ्लूरिसी, डिपथीरिया, मूत्राशय की सूजन आदि से इसके परिणामस्वरुप हृदय के सिकुड़ने-फैलने में धीमा-धीमा दर्द होता है, कभी-कभी चाकू मारने जैसा तीव्र दर्द हो सकता है। अत्यधिक घबराहट एवं बेचैनी अनुभव करना, नाड़ी की गति ५० से ६० तक आ जाना।

बचपन तथा जवानी में आर्टरी (धमनियां) लचकीली होती है इसलिए रक्त अपनी साधारण गति से चलती है। बुढ़ापा आने तक धमनियां कड़ी पड़ जाती है और रक्त के प्रवाह के आने पर फैलती नहीं है क्योंकि कड़ापन ही ब्लड प्रेशर के बढ़ जाने का कारण होता है। यही कारण है कि रक्त के प्रवाह को धमनियां कड़ी हो जाने के कारण बर्दाश्त नहीं कर सकती और ब्रैन की नस फट जाती है और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

आज के युग में जीवन का संघर्ष बढ़ने चिंताओं की भरमार होने, नींद नहीं आने से, खाने-पीने में लापरवाही होने के कारण यह रोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है।

हाई ब्लड प्रेशर में प्रमुख होमयो औषधियाँ :-
बेलाडोना, ग्लोनाइन, बैराइटा म्यूर, आरम म्यूर, क्रेटेग्स, आर्सेनिक, जेल्सीमियम आदि।

लो ब्लड प्रेशर में प्रमुख होमियो औषधियां :-
कोनायम, डिजिटेलिस, कैलमिया, कैक्टस, एसिडफास्ट आदि औषधियाँ लक्षण के अनुसार लेने पर अत्यधिक फायदा मिलती है।

हृदय संबंधी उपचार अगर अच्छे अनुभवी चिकित्सकों से सलाह लेकर औषधियाँ सेवन करने से विशेष आराम मिलता है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से
स्वतन्त्रता दिवस, श्रावणी पर्व की अग्निदूत पत्रिका के १४वें वर्ष में प्रवेश पर **समस्त प्रदेशवासियों एवं सुधी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ**

श्रावणी

वेद ही जग में हमारा ज्योति जीवन-सार है ।
वेद ही सर्वस्व प्यारा, पूज्य प्राणाधार है ॥टेक॥
सत्यविद्या का विधाता, ज्ञान गुरुगण गेय है ।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्म धी का ध्येय है ॥
वेद ही परमेश प्रभु का प्रेम पारावार है ॥॥१॥

❀ ❀ ❀

ब्रह्म-कुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा ।
वैश्य-वेश विभूषिता है, शूद्र-कुल स्वामी महा ॥
वेद ही वर्णाश्रमों का आदि है, आधार है ॥२॥

❀ ❀ ❀

श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव पुण्य पावन पर्व है ।
वेदव्रत स्वाध्याय वैभव, आज ही सुख सर्व है ॥
वेदपाठी विप्रगण का दिव्य दिन दातार है ॥३॥

❀ ❀ ❀

वेद का पाठन-पठन हो वेद-वाद विवाद हो ।
वेद हित जीवन मरण हो वेद-हित आह्लाद हो ॥
आर्यजन का आज से व्रत विश्व वेद-प्रचार है ॥४॥

❀ ❀ ❀

"विश्व भर को आर्य करना" वेद का सन्देश है ।
"मृत्यु से किंचित् न डरना" ईश का आदेश है ॥
सृष्टि-सागर में हमारा, वेद ही पतवार है ॥५॥

❀ ❀ ❀

रोज-रोज सरोज सम श्रुति सूर्य से खिलते रहें ।
वेद-चन्द्र चकोर हम, द्युति मोद से मिलते रहें ॥
वेद ही स्वामी सखा सब, वेद ही परिवार है ॥६॥

वैदिक धर्म विशारद, श्री सूर्यदेव शर्मा

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

भारत वर्ष महान

आजादी की विजय-माल को ।
सदा सुगन्धित रखना ॥
भारत के शुभ संविधानों को ।
सदा सुरक्षित करना ॥
चिरंजीवी भव सत्य समर्पित ।
मेधावी सन्तान ॥
देश सुरक्षा सदा मांगती ।
वीरों का बलिदान ॥
कण-कण को दे तेज चेतना ।
जन-जन का कल्याण ॥
वेद ज्ञान अमृत की साधना ।
कोटि-कोटि वरदान ॥
विश्व सभ्यता का गौरव है ।
भारत वर्ष महान ॥
सत्य-सुरक्षा न्याय पथ पर ।
बढ़ते चलो जवान ॥

- **हरबंशलाल कपूर,** आर्य प्रादेशिक सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली - 110001

युवाओं की आजादी

अमर शहीदों की लहू की, कीमत ही ना जानी है
हम आजाद हुए लेकिन, आजादी ना पहचानी ॥

बचपन आज शहीद हो रहा, क्रिकेट के मैदानों पर,
और बुढ़ापा खांस रहा है, मदिरा की दुकानों पर,
विलासिता की फिल्म देखने बैठी हुई जवानी है ॥
हम आजाद हुए ...... ॥

मिली सभ्यता बड़े घरों की, ऊंची ऐड़ी पर चलते,
आज नग्नता वक्ष चढ़ी है, गोदी में पलते-पलते,
कितनी आजादी पाई, और कितनी की मनमानी ॥
हम आजाद हुए ...... ॥

विद्या की अर्थी होते हैं, कालेजों स्कूलों में,
कफन ज्ञान का दफन हुआ, वर्तमान की मूलों में,
गुरु-गोविन्द नशे में दोनों, बढ़िया नींव रखानी है ॥
हम आजाद हुए ...... ॥

मरने के सस्ते-सस्ते, पर राह मिली ना जीने की,
किस्मत भी महंगी पड़ती, आज कीमत घटी पसीने की,
मजदूरी की बेटी चिथड़े पहने हुई सयानी है ॥
हम आजाद हुए ...... ॥

यौवन की पूंजी पाकर भी, हमने सब कुछ खोया है,
निर्धन को फूटपाथ दिया, पैसा कुर्सी पे सोया है,
यह सब तो पहले भी था, ये झांकी रही पुरानी है ॥
हम आजाद हुए ...... ॥

इस आजादी से पहुंचे हम, गहरे और रसातल में,
माटी की अब खायें, तो भारत बदलेंगे पल में,
सुनो युवाओं ! कदम बढ़ाओं ! मौसम अब तूफानी है ॥
हम आजाद हुए ...... ॥

रचयिता : डॉ. वेदप्रकाश व्यास, व्यास मेडिको, गैरतंग, जिला-रायसेन (म.प्र.)

संस्कृति चिन्तन

जब तक वेद व्यास न होगा, कोई तुलसीदास न होगा,
परम्परा का भास न होगा, तब तक बन्धु विकास न होगा।
अन्तर की धूमिल अरुणाई, तन्द्रामय जब तक तरुणाई,
मरे हुए मन के मंदिर में, भारत माँ का वास न होगा ।

विश्व-संस्कृत-दिवस (श्रावणी पूर्णिमा)

प्रत्येक कार्य का आरम्भ लघु होता है फिर वह महान् होता जाता है। इस दृष्टि से विश्व संस्कृत दिवस का लघु रुप व्यक्ति संस्कृत दिवस, फिर ग्राम-संस्कृत दिवस, जिला संस्कृत दिवस, प्रान्त संस्कृत दिवस, राष्ट्र संस्कृत दिवस अन्त में विश्व संस्कृत दिवस का क्रम होता है। किन्तु यह उतावलापन क्यों? लगता है कि संस्कृत बोलने में झिझक महसूस हुई इसलिए विश्व को संस्कृतज्ञ लोग अपने साथ समेटने के लिए विश्व संस्कृत दिवस मनाया जा रहा है। यह तो बिलकुल सत्य है, **"एकोऽहं बहुस्याम्"** न्याय से अकेला संस्कृत चिन्तक, वक्ता, श्रोता होने से काम नहीं चलने वाला, व्यक्ति, ग्राम, जिला, प्रान्त, राष्ट्र और विश्व की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, रेखाचित्र बनाकर उसमें विविधाकृति बनाकर रङ्ग बनाना पड़ेगा। श्रवणा नक्षत्र जिस पौर्णमासी को पड़े वह **"श्रावणी पूर्णिमा"** है। नक्षत्र का नामकरण परमात्मा ने वेदों के श्रवणार्थ ही किया है। श्रावण मास से माघ मास तक वेदों का स्वाध्याय जोरों पर किया जाता रहा है। इसीलिए बहुधा चिन्तन करके श्रावणी पूर्णिमा को विश्व संस्कृत दिवस घोषित किया गया है। - सम्पादक

डी.ए.वी. नन्दिनी ने मनाया कारगिल दिवस

नन्दिनी (भिलाई) । दिनांक २६ जुलाई २०१८ को डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइंस के परिसर में स्थित महात्मा हंसराज सभागार में भारतीय जवानों के शौर्य गाथा के स्वर्मिम स्मृति में कारगिल दिवस महासमारोह के साथ उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कक्षा दसवीं के छात्र-छात्राओं द्वारा कारगिल विजय पर केन्द्रित बलिदान की कहानी को पावर पाइंट की प्रस्तुति के माध्यम से प्रदर्शित किया । इस प्रस्तुति में कारगिल में शहीद हुए वीर जवानों चमत्कारिक एवं वीरतापूर्ण कारनामों का विस्तृत वर्णन किया गया । विद्यालय के वरिष्ठ संस्कृत शिक्षक कर्मवीर शास्त्री ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए, कारगिल महासंग्राम की पृष्ठभूमि का जिक्र करते हुए सन् १८५७ के प्रथम स्वन्तत्रता संग्राम से लेकर के १९४७ के आजादी आंदोलन एवं कारगिल विजय में अपनी शहादत देने वाले आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. के महान् योगदानों विशद् चर्चा के साथ महान् योद्धाओं के साहसिक कार्यों का वर्णन करते हुए अपने स्तर पर मातृभूमि की सेवा करने का संकल्प लेने पर जोर दिया । कक्षा सातवीं एवं आठवीं के छात्र-छात्राओं ने देश-भक्ति की भावना से ओतप्रोत एक सुंदर समूहगान प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को देश-प्रेम में सराबोर कर दिया । कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् सौम्या मिश्रा ने शहीदों पर एक मार्मिक कविता एवं खुश्बू साहू ने अपना ओजस्वी वक्तव्य पेश किया छात्र-छात्राओं ने इस अवसर पर एक बहुत ही आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण नाटक का मंचन किया जिसमें सैनिक जीवन की कठिन चुनौतियों के प्रदर्शन के साथ-साथ मातृभूमि की आन-बान और शान की रक्षा के लिए बलिदान की मर्मांतक गाथा को देखकर सारा सभागार कभी तालियों की गड़गड़ाहट से तो कभी नारों के उद्घोष से गूंज उठता था । कक्षा दसवीं की ही छात्रा गणवीर अपने मनोरम कविता के माध्यम से एक शहीद परिवार की दास्तान इस भाव-भंगिमा के साथ पेश की, कि पूरी दर्शक दीर्घा की आँखे डबडबा गई । इस कार्यक्रम का सुचारु संचालन कक्षा दसवीं की छात्रा खुशी शुक्ला और प्रज्ञा राजपूत ने बखूबी किया । विद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी.पी. साहू की सत्प्रेरणा एवं वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती रानू खंडूजा के दिशा निर्देशन में यह समारोह सफल रहा । अंत में विद्यालय की वरिष्ठा शिक्षिका श्रीमती माया विनोद ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जिनका प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग मिला उनका आभार व्यक्त किया ।

हरियाली महोत्सव सम्पन्न

नन्दिनी (भिलाई) । डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल में दिनांक १५-७-२०१८ से २१-७-२०१८ तक हरयाली सप्ताह के रुप में मनाया गया । इस अवसर पर शाला के प्राचार्य डॉ. बी.पी. साहू के निर्देशन में छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया । छात्र-छात्राओं द्वारा पोस्टर निर्माण, नारे, निबंध, भाषण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में छात्र-छात्राओं ने संदेश दिया कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वृक्षारोपण अति आवश्यक है, वृक्ष जीवन का अस्तित्व है, वृक्षों के बिना धरती पर जीवन की कल्पना करना असंभव है । समापन दिवस को विद्यालय के प्रांगण में विद्यार्थियों द्वारा कुल २५० पौधे रोपे गए । इस अवसर पर मुख्य अतिथि डी.जी.एम. उल्लास कुमार एवं विशेष अतिथि के रुप में पर्यावरण विभाग के श्री मनीष दुबे ने भी वृक्षारोपण किया । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री उल्लास कुमार ने कहा कि पौधे लगाना व उनकी सुरक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है । अपने उद्बोधन में प्राचार्य महोदय ने कहा कि बच्चों एवं जनसामान्य द्वारा जारुकता लाकर ही पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित किया जा सकता है । तदुपरान्त नन्दिनी नगर में जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से लगभग पांच सौ बच्चों के द्वारा जागरुकता रैली निकाली गई । जिसकी शुभारम्भ डी.जी.एम. श्री उल्लास कुमार द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया । नारों व उद्घोष से निकाली गई जागरुकता रैली का उद्देश्य पूर्णतः सफल रहा ।

- संवाददाता : प्राचार्य. डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी नगर भिलाई

श्रद्धाञ्जलि

उड़ीसा। ओड़िशा एवं छत्तीसगढ़ में विगत पचास वर्षों से महर्षि दयानन्द सरस्वती का वीर सिपाही बनकर गाँव-गाँव गली-गली में वैदिक ध्वजा को फहराने वाले प्रचारक रणजीत आर्य का ८ जून २०१८ को देहावसान हो गया। उनका अंतिम संस्कार वैदिक विधि-विधान से आचार्य बृहस्पति नवप्रभात आश्रम एवं अन्य स्थानीय स्नातकों के सहयोग से किया गया। १८ जून २०१८ को शांति यज्ञ किया गया, जिसमें आर्य जगत के संन्यासी, वानप्रस्थी, गुरुकुल के स्नातक एवं विद्वान् उपस्थित थे। सभी ने आर्य समाज व वैदिक धर्म के प्रति किए गए उनके योगदान को याद किया और दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि दी। *संवाददाता : प्रेमप्रकाश शास्त्री, स्नातक परिषद*

आर्य दैनन्दिनी–२०१९ (डायरी)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर सहित प्रकाशित करता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके। कई विद्वानों के नम्बर बदल गये हैं, अतः आप सभी से निवेदन है कि आप सब अपना नया नम्बर और पता भेजें। **यह आप ३१ अगस्त २०१८ तक भेजने की कृपा करें। ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके। – संजीव आर्य (प्रबंधक), आर्य प्रकाशन,** ८१४ कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६, मोबा. ०९८६८२४४९५८, ई-मेल -aryaprakashan@gmail.com

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। **अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

ओ३म्

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

दिल्ली (भारत)

25 से 28 अक्टूबर 2018

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी संवत् २०७५

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली, भारत

महासम्मेलन में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।
संगठनात्मक एकता हेतु लाखों की संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

सुंदर व्यवस्था हेतु सम्मेलन में आने से पूर्व महासम्मेलन कार्यालय में अपना पंजीकरण अवश्य करा लें।
पंजीकरण वैबसाईट पर भी किया जा सकता है। आगंतुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

अपील :- महासम्मेलन की सफलता हेतु " दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018" के नाम से क्रास चैक / ड्राफ्ट सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करें।

महासम्मेलन हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान/सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है

निवेदक

सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9824072509

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष
स्वागत समिति
+91 11 25937987

प्रकाश आर्य
मंत्री
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9826655117

धर्मपाल आर्य
सम्मेलन संयोजक
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9810061763

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 91-9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube thearyasamaj 9540045898

पहुँचने का मार्ग - दिल्ली मैट्रो के रिठाला अथवा बादली स्टेशन पर उतर कर सम्मेलन स्थल पर पहुंचा जा सकता है ।

CHH-HIN/2006/17407 अगस्त 2018 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001